मधु काव्य
मधु सिंघी

मधुकाव्य

मधु सिंघी

मधुकाव्य

कवयित्री

मधु सिंघी

.....

मुखपृष्ठ / छायाचित्र

मधु सिंघी

206, हिमालय पैराडाईज,

सिविल लाईन्स, नागपुर (महाराष्ट्र)

पिनकोड - 440001

मोबाइल : **+ 91 9422101963**

.....

ई-मेल :

msmadhusinghi8@gmail.com

.....

परामर्श : अविनाश बागड़े

.....

अविशा प्रकाशन

84, अविशा, जैतनवन सोसायटी, शास्त्री ले-आऊट,

खामला, नागपुर - 440025

मोबा. 9373271400

aavinashbag@gmail.com

.....

मुद्रक : स्कॅन डॉट कॉम्प्युटर, नागपुर

.....

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

मूल्य : ₹ 200

मेरी निगाह में...

मधुकृति और मधुछंद के बाद मधुजी अपने मधुमय छंदो के साथ आप तक पहुँच रही है। छोटे से लेकर शनैः शनैः कुछ बड़े शब्द विन्यास की तरफ मधुजी का गमन उनकी सृजनशीलता को रेखांकित करता है।

पहले ही भजन-लेखन और गायन की दिशा में आपने एक सामाजिक दायित्व को पूरा करने का जो संकल्प लिया है वह अनुकरणीय है।

आपका एक और चेहरा है जो आपको छायाचित्रकार के रूप में स्थापित करता है। अपने फोटोग्राफी के शौक को आपने बखूबी अपने कृतियों में संलग्न कर एक जुगलबंदी का तोहफा पाठकों को दिया जो आपकी सोच को व्यापकता प्रदान करता है। छंदो में गणना और लय इस बात का पूरा-पूरा ख्याल मधुजी ने रखते हुए यह स्तुत्य प्रयास किया है। नीति परख बातों से लबरेज इस पुस्तक के सारे छंद किसी पाठशाला सा अहसास कराते हैं। लेखन का एक भी शब्द यदि किसी के काम आ जाए तो मधुजी और **अविशा प्रकाशन** दोनों ही खुद के प्रयासों को सार्थक समझेंगे।

आपकी सोच, आपकी मेहनत, आपका सृजनशील मन कुछ इसी तरह रचते हुए समाज को साहित्य के कुछ नए दस्तावेज देकर समाज के प्रति अपना दायित्व पूरा करें, इसी आशा और विश्वास के साथ...

अविनाश बागड़े

सदस्य,

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई

मेरा मंतव्य

ईश्वर की असीम अनुकंपा से मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मेरे द्वारा रचित 'मधुकाव्य' मैं आप लोगों के सामने प्रस्तुत करने जा रही हूँ। सतत कुछ नया सीखने की लगन ने मुझे पिछले तीन चार वर्षों से लेखन की ओर ज्यादा प्रवृत किया है। हर चिंतक अपने आस पास घटित घटनाओं से और प्रकृति से कहीं न कहीं प्रभावित होता ही है, जिसके परिणाम स्वरूप उसे अपने मन के भावों को लेखन में ढालने का अवसर मिलता है। हर साहित्य साधक यह प्रयास करता ही रहता है। 'मधुकाव्य' में मैनें मेरे मन के भावों को काव्य में ढालने का प्रयास किया है।

जहाँ एक ओर मैंनें जापानी विधा के हाइकु, हाइगा, हाइबुन, ताँका, सेदोका, कतौता, चोका, रेंगा सीखा वहीं दूसरी ओर प्राचीन भारतीय विधा के दोहा, रोला, कुँडलियाँ, उल्लाला, आल्हा, चौपाई, गीत, नव गीत कहमुकरी इत्यादि मात्रिक छंद और सवैया, माहिया, घनाक्षरी इत्यादि वर्णिक छंद सीखे। इन सभी विधाओं पर आधारित मेरी लगभग २० साझा पुस्तकें छप चुकी हैं।

मेरी पूर्व तीन एकल पुस्तकें मधुकृति, मधुछंद और मधुश्रव्य क्रमशः हाइकु-हाइगा, दोहा-कुँडलियाँ और भजन-गीतों पर आधारित थी। उपरोक्त पुस्तकों को आप सबकी भरपूर सराहना ने मुझे और लिखने के लिए प्रेरित किया, जिसके लिये मैं आप सबकी बहुत आभारी

हूँ।

आजकल जहाँ एक ओर कुछ माता पिता बहुत अच्छे संस्कार देकर अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए दिन रात प्रयत्नरत हैं वहीं दूसरी ओर कुछ बच्चों को किसी न किसी कारण से माता पिता से वंचित रहना पड़ता है। ऐसे बच्चों के जीवन में यह पुस्तक 'मधुकाव्य' कुछ न कुछ संस्कार निरूपण का कार्य अवश्य करेगी ऐसा मेरा विश्वास है। हमारी संस्था समरूपण के अंतर्गत सामाजिक कार्यों के दौरान मुझे ऐसे कई बच्चों के बीच में जाने का अवसर मिलता रहता है। उनकी कुछ समस्याओं पर हमारी चर्चाएं भी होती है। उस दौरान जो विषय मेरे ध्यान में आते हैं उन्हें मैनें मधुकाव्य में कुछ कविता के रूप में ढालने का प्रयास भी किया है। मुझे विश्वास है सरल शब्दों में लिखा मेरा यह काव्य उन बच्चों के लिए भी बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

हर लेखक या कलाकार को अपनी रचना प्रिय होती है इसलिए वह सभी के साथ साझा करना चाहता है। आशा करती हूँ मेरा यह प्रयास सार्थक होगा। इनमें से कुछ कविताएँ आकाशवाणी से प्रसारित हो चुकी हैं। कई मंचों से भी मेरे द्वारा प्रस्तुत की जा चुकी हैं। विविध समाचार पत्रों में पढ़कर पाठको की अनुशंसा मुझे मिली हैं। आशा है आप सबको भी 'मधुकाव्य' पसंद आयेगा। आपकी प्रतिक्रिया का मुझे इंतजार रहेगा।

धन्यवाद!

मधु सिंघी

पूर्व अपूर्व

लहरों में संगीत उत्पन्न करते हैं किनारे। प्रवाहों को शालीन सौंदर्य की सौगात सौंपते हैं। संचालित करते हैं हौले हौले। गंतव्य तक साथ साथ चलते हैं। छांदस कविता के बारे में यही सच है। वे चिरकाल तक स्मृतियों में मुक्त होती हैं। उनमें लय स्वभावज है।

इस दिशा में दुष्यन्तकुमार याद आते हैं - जो कविता लोगों तक नहीं पहुंचती, उनके गले नहीं उतरती वह किसी भी क्रान्ति की संवाहिका कैसे हो सकती है।

मधु की कविता ने किसी वाद का मुखौटा नहीं पहना। अतिशय बौद्धिकता का आवरण भी नहीं। उनकी कविता समरूपण (संस्था) के सेवा पथ से होती हुई, शोषित बच्चों के अन्तर्मन की थाह लेकर, उस वृहत्तर उद्देश्य के संपादन हेतु चल पड़ी है, जिसे हम सांस्कृतिक चेतना का उन्नयन कहते हैं। सरल शब्दों में मधुकाव्य को नीति का फलसफा या काव्यात्मक नीतिशास्त्र कह सकते हैं।

उपभोक्तावाद, जीवन की नैसर्गिक लय खंडित कर रहा है। वे इसे पूर्ववत् अनगढ़ रूप में पाना चाहती हैं। जीवन को लयबद्ध करुंयही कामना है। उनके लिये कविता फैशन नहीं है। भावी पीढ़ी के लिये चैतन्य पीठिका के निर्माण की योजना है। सांस्कृतिक चेतना का पुनरुद्धार करना है।

उनके रचनाकर्म एवं जीवन शैली में द्वैत नहीं है। चिन्तन एवं कर्म का अद्वैत ही गांधीवाद है। अहिंसा के पथ पर बुद्ध, महावीर की वाणी है। कृष्ण से प्रकाश है। मनुष्यधर्म में प्रभूत दार्शनिकता है। हजार शब्दों का काम एक तस्वीर कर देती है तो सेवा का एक कृत्य भी।

वे जानती हैं वस्तुस्थिति - असली चेहरा छुपा लो अब मुखौटों का दौर है। हो गया है संस्कृति में विकृति का मिलन - उन्हें गुमशुदा मानवता की तलाश है। यही वजह है कि वे जीवन जीने की कला सीखना जरूरी है कहती हैं। प्रेम बने आराधन तो सारा कलुष मिट जाय। समाज के ताने बाने में सकारात्मकता, विश्वास, पारिवारिक सौहार्द्र, पर्यावरण संरक्षण, प्रकृति प्रेम तथा नारी अस्मिता का रंग भरना चाहती हैं।

प्रकृति और मानवीय संबंधों के सूक्ष्म स्पंदन चुने हैं/ सुने हैं उन्होंने। दीपक की ख्वाहिश वो आईना है जो उजली शब्द रचना से प्रतिश्रुत है। समसामयिक संदर्भों से सीधी मुठभेड़ है उनकी। नज़रें चुराने का तो सवाल ही नहीं उठता - कर दी घुसपैठ कोरोना वायरस ने, जिन्दगी की सबको अब पहचान हो गयी।

एक विप्लवी चिन्तन भी महाभारत से उपजा है - निज लालच की पट्टी बाँधे,गांधारी ने जीवन जिया। यह सर्वथा नूतन परिप्रेक्ष्य है। जीवन यज्ञ सतत चले,

साँसों का घृतपान। डालो समिधा कर्म की पूरे हों अरमान।

खाली-पीली द्रविड़ प्राणायाम किसलिए!

धूप खिड़की से उतरती है तो पूछती नहीं, हवाएं खुशबू का मोलभाव नहीं करतीं, बारिशें रूप, रंग, जाति, धर्म की पड़ताल कर हथेलियां नहीं भिगोतीं, चाँद सभी का अपना है, सूरज का उजाला चन्द कुबेरों के कटोरों में नहीं गिरता! भेद हमने बनाये और सभ्यता का नाम दे दिया। मधु की कविताएं अभिधात्मक/अभेदात्मक हैं। उन्होंने पाठक के मन तक सीधी राह चुनी है। फंतासी से कोसों दूर हैं।

रचनात्मकता ने निसर्ग के रमणीय अनुप्राण भी धारण किये हैं। शरद की हल्की पीली धूप सा रूमान है प्रकृति चित्रों में।

प्रस्तुत कृति में कुछ गीतिकाएं हैं, कुछ नवगीत, दोहे, मुक्तक, चौपाई, आल्हा छंद एवं मनहरण घनाक्षरी छंद भी हैं। काव्यात्मक अनुशासन स्वाभाविक गरिमा लिये है। आरोपित बंधन नहीं। भाषा नदी की अनुगामिनी है।

मधु के स्वप्न धरती पर उतरने को बेताब रहते हैं। उन्हें आँखों से रिहाई चाहिए। वो स्वप्न ही क्या जो असमतल धरातल का खौफ़ खायें। मधु जैसे अज्ञेय के स्वरों में कहना चाहती हैं : कविता जड़ाऊ, मात्र शब्दों की मीनाकारी नहीं है और न ही वह हो सकती है क्योंकि

वे जमाने अब लद गये हैं।

अविशा प्रकाशन की यह कृति निश्चय ही पाठकों विशेषतः नयी पीढ़ी के अन्तःकरण में स्थान बनाने में सक्षम होगी। ऐसा विश्वास है -

अनन्य शुभकामनाएं

३०-१०-२०२१

इन्दिरा किसलय
(लेखिका/कवयित्री)
नागपुर-२७
०९९६०९९४९११

समर्पण

मेरे परिवार का प्रेम, बुजुर्गों का आशीर्वाद एवं समस्त गुरुजनों की सीख ने मुझे आत्मविश्वास और सुलझा हुआ व्यक्तित्व प्रदान किया। अपने द्वारा लिखित पुस्तक 'मधु काव्य' मैं अपने पूरे परिवार को समर्पित करती हूँ।

प्रेम गंध अंतस बसे, महके मन का बाग ।
रिश्ते खिलते फूल से, तितली सा अनुराग ॥

शब्द मन मीत बनो

शब्द तुम्हीं मन मीत बनो, जीवन का संगीत बनो ।
हर मुश्किल हालातों में, मेरी अपनी जीत बनो ।।

साधना हो नित तुम्हारी, व्यवहारिक नवनीत बनो ।
साथ सदा देना मेरा, मेरे अपने मीत बनो ।।

है प्रफुल्लित हिय तुमसे, नेह की एक रीत बनो ।
तुम हो मन की परिभाषा, मेरे प्रणय के गीत बनो ।।

संकोच नहीं रहे तुमसे, हिय के तुम उद्‌गार बनो ।
मुखरित रहो सदा मुख से, मन की प्यारी प्रीत बनो ।।

सहज धारा प्रवाह रहे, फिर समृद्ध एक लय बनो ।
दुनिया भर का सुख तुमसे, मेरा सुर-संगीत बनो ।।

तुम मेरी परिचय-रेखा, मेरा तुम हर कर्म बनो ।
तुमसे मेरी अभिव्यक्ति, तुम सुखमय सुनीत बनो ।।

शब्द-शब्द तुम कली बनो, और निखरकर सुमन बनो ।
माँ सरस्वती की हो कृपा, तुम कविता की रीत बनो ।।

लय बद्ध जीवन

प्रगतिशील हो विचार मेरे, उस पर सदा मनन करूँ ।
सकारात्मक सोच रखकर, चिंतन सदैव गहन करूँ ।।

भावना हो क्षमा भाव की, स्वागत सबका नित्य करूँ ।
छोड़ कर पूर्वाग्रहों को, प्राणी मात्र से प्रेम करूँ ।।

ऊर्जा नित नई भरूँ मैं, कर्मठता की नींव धरूँ ।
कथनी करनी सम रहे, पहले खुद से प्रेम करूँ ।।

आने वाली हर विपदा को, हँसकर ही मैं सहन करूँ ।
आपत्ति ना किसी बात में, नवीन विचार ग्रहण करूँ ।।

विचारों में लय आ जाए, कविता में हर रंग भरूँ ।
तारतम्यता हो सोच में, जीवन को लयबद्ध करूँ ।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

मन की आँखें

मन की आँखें खुल जाये, भाव सरल से घुल जाये ।
उलझनें सकल छोड़कर, अपने मन की सुन पाये ।।

आपाधापी जीवन की, धीरजता खोती मन की ।
सौम्य भाव जो आ जाये, अपने मन की सुन पाये ।।

लालच जब-जब हावी हो, चंचलता अनुरागी हो ।
धैर्यवान जो हो जाये, अपने मन की सुन पाये ।।

रिश्तों में जब गाँठें हों, मौन भरे सन्नाटे हो ।
पछतावा जब हो जाये, अपने मन की सुन पाये ।।

सहजता भरी बातें हो, मधुर भाव से रिश्ते हो ।
सरस बोल फिर मिल जाये, अपने मन की सुन पाये ।।

सच्चे दिल से सेवा हो, पुलकित मन का मेवा हो ।
परोपकार के भाव हो, अपने मन की सुन पाये ।।

कटुता जब भी आती है, कटार बन चुभ जाती है ।
माफ करने का गुर आये, अपने मन की सुन पाये ।।

अपना लो

ज्ञान का विस्तार करें हम,
हिंदी बनती सबकी शान।
मातृ धरा अभिमान हमारा,
हिंद बढ़ाये अपना मान।।

जो जाने भाषा की खूबी,
वो ही पाये उसका ज्ञान।
वरना हास्यास्पद है बोली,
तोड़ मरोड़ परोसे जाना।।

एक बनो कहती है भाषा,
आपस के रिश्ते मजबूत।
बीच रहो कोई मत दूजा,
ये अपनी बनती है दूत।।

संस्कृत सब भाषा की जननी,
फिर क्यों इसमें आती शर्म।
लिपिबद्ध इसे याद रखें सब,
हो इसको अपनाना कर्म।।

अपनी संस्कृति अपनी भाषा,
ये ही तो अपना है गर्व।
हिंदी को दिल से अपना लो,
पूरे साल मनाओ पर्व।।

उदासियों का काजल

काजल ये उदासियों का, अब मिटाना चाहिये ।
अंधकार फैला मन में, अब हटाना चाहिये ।।

फैला हुआ सुख हर तरफ, बाधित नजर हमारी ।
घेरे बैठा है जो दुख, अब हटाना चाहिये ।।

रौशनी सत्य सूरज की, होती सदा सुखद है ।
झूठ-फरेब की धुंध को, अब हटाना चाहिये ।।

सही परिप्रेक्ष्य में देखना, होता सदैव अच्छा ।
घेरे गलतफहमियों के, अब हटाना चाहिये ।।

जाल हर तरफ मायावी, जो कर रहा है भ्रमित ।
दूर भ्रम का आवरण हो, अब हटाना चाहिये ।।

ज्ञान का आकाश फैला, जो रहा चारों तरफ ।
अज्ञानता के बादलों को, अब हटाना चाहिये ।।

सफल होने के लिये बस, कौशिशें चलती रहें ।
बड़े दाग नाकामी के, अब हटाना चाहिये ।।

मधुमय बदली

क्षणभंगुर मेरा जीवन, अनंत में समा जाऊँगी ।
साँस की मैं पतली रेखा, शून्य में समा जाऊँगी ।।

धारा प्रवाह बनकर नदी, बहती सतत मैं जाऊँगी ।
मैं हूँ नीर की एक बूँद, सागर में समा जाऊँगी ।।

क्रोध रूपी मैं अग्नि ज्वाला, जलती अहं में जाऊँगी ।
धू-धू कर खुद मैं एक दिन, अग्नि में समा जाऊँगी ।।

मैं हूँ ओस की एक बूँद, पत्तों की गोद सो जाऊँगी ।
कोहरे ने दिया है जीवन, सूरज में समा जाऊँगी ।।

कुछ नहीं है पास मेरे, गुरूर कहाँ कर पाऊँगी ।
मिट्टी से ही बनी हूँ मैं, मिट्टी में समा जाऊँगी ।।

कब तक करूँगी जोड़ तोड़, हिसाब क्या रख पाऊँगी ।
मैं तो आयी हूँ शून्य से, शून्य में समा जाऊँगी ।।

उँडू कितनी भी हवा में, मैं खुद हवा हो जाऊँगी ।
सिर्फ अहसास बनकर मैं, हवा में समा जाऊँगी ।।

सागर की नमी बनकर, अहसास तो करवाऊंगी ।
मैं हूँ मधुमय एक बदली, बरसा प्रेम रस जाऊँगी ।।

प्रबुद्ध हम बनते जायें

प्रबुद्ध हम बनते जायें, चिंतन भी करते जायें ।
छोड़कर चिंताएँ सारी, शांत मना बस हो जायें ।।

कुंठित मन जलता हरदम, अंगारा सा हो जाये ।
कल्पनाओं में उड़ता मन, डर-डर कर ही रो जायें ।।

मन विचार तन को घेरे, रुग्ण कभी भी हो जाये ।
भावों को ही स्वस्थ रखें, मन पक्के अब हो जायें ।।

जब कालगति को समझकर, चलायमान हम हो जायें ।
मन में उठते सभी बवंडर, हो शांत वहीं सो जायें ।।

घटनाएँ नहीं नियंत्रित, काबू कैसे हो जाये ।
छोड़ कर दुविधा सारी, निर्लिप्त बन रहते जायें ।।

बचना सदा प्रलोभन से, संवरते मन से जायें ।
रहना है अनुशासन में, दृढ़ संकल्प करते जायें ।।

विचार पुंज बना जीवन, विचार थोड़े थम जायें ।
समता रंग चढ़े गहरा, शांति में हम रंग जायें ।।

परोपकारी भाव रहे, दया-दान मन भा जायें ।
शासन खुद पर करना है, नियमों में ढलते जायें ।।

भाव सरल रखकर मन में, निरूद्विग्न मन बन जाये ।
चेतना स्थिर हो चित्त में, स्थितप्रज्ञ बनते जायें ।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

मन की ना तैयारी

जीवन चलता रहे निरंतर, कुछ नित्य अचानक होता है ।
जो ना भाये मन को अपने, दिल इसी बात पर रोता है ॥

कोई करता अपने मन की, बस हजम हमें ना होता है ।
उसको ना मालूम हमारा, दिल इसी बात पर रोता है ॥

सबकी चाहत बड़ा बनूँ मैं, कोई तो आगे होता है ।
बैचेन फिर ईर्ष्या से मन, दिल इसी बात पर रोता है ॥

आधि व्याधि से भी व्याकुल, कभी गात अपना होता है ।
सहन नहीं होता है मन को, दिल इसी बात पर रोता है ॥

कुंठित मन जलता जाता है, अंगारों पर वो सोता है ।
डर-डर के फिर जीवन जीता, दिल इसी बात पर रोता है ॥

सपनों की दुनिया में है मन, हकीकत को नहीं ढ़ोता है ।
कल्पना बने नहीं हकीकत, दिल इसी बात पर रोता है ॥

सोच-सोच कर भविष्य अपना, जो निंद्रा अपनी खोता है ।
जी नहीं सके वर्तमान भी, दिल इसी बात पर रोता है ॥

जो है वही सहज स्वीकार, अच्छा-बुरा नहीं होता है ।
अपने मन की ना तैयारी, दिल इसी बात पर रोता है ॥

आडंबर

आडंबर झूठे जीवन के, जीव भटकता रहता है ।
एक पल भी चैन उसे नहीं, ढूँढ़ता स्व को रहता है ।।

छिछली गगरी तो छलके है, उथला थाह न पाता है ।
कितना भी दबाओ क्रोध को, शुभचिंतक बन आता है ।।

ईर्ष्या भाव क्या लगता सगा, जो रोज चला आता है ।
लदी पोटली अहंकार की, जबरन वो दे जाता है ।।

क्रोधी मन तो उछले झट से, व्यर्थ में शोर मचाता है ।
अपनो से करने वो दूर, चला कभी भी आता है ।।

मन को कितना भी समझाओ, बाज नहीं वो आता है ।
रिश्तों के अथाह सागर में, डूबा वो तो जाता है ।।

सुकर्म दान दया भक्ति प्रेम, मन में भरते जाना है ।
सकारात्मक सोच से ही फिर, आत्मा को भर जाना है ।।

अंतिम क्षण जब हो जीवन का, उत्सव सा मन जाना है ।
हँसते-हँसते जग से जाना, सभी यहाँ रह जाना है ।।

तिरंगे की शान

सिर्फ तिरंगा फहराने से, बढ़ेगी कैसे अपनी शान ।
जो देते रहे कुर्बानियाँ, करें उनका सदा सम्मान ।।

पूरा समाज ही हो शिक्षित, करें पूर्ण सबके अरमान ।
फले - फूले परिवार सबके, छुये देश पे जो ।।

प्रगति पथ पर बढ़ते ही रहें, मिले दुनिया में पहचान ।
विज्ञान फलित होता रहे, मिले ज्ञान को सम्मान ।।

हक बराबर सबको मिले, सबके लिए ये संविधान ।
ना जाति ना वर्गभेद रहे, हो अधिकार एक समान ।।

निज स्वार्थ को छोड़कर, समस्या का रहे निदान ।
हो महामारी चाहे संकट, मदद मिले सदैव समान ।।

हिलमिल कर ही कार्य हों, एकदूजे का करना मान ।
सत्य-अहिंसा माप दंड, देश के लिए सदा कुर्बान ।।

हमको प्यारी आजादी, देश हित का ही अरमान ।
अमृत महोत्सव मना रहे, देश का करना उत्थान ।।

मन करता है

लेकर सदा हाथ में सूरज, खेल सकूँ मन करता है ।
गहरे उतरूँ दरिया में बस, नाप सकूँ मन करता है ।।

असंभव को कर दूँ संभव, मेरा ये मन करता है ।
ऊँचाई उड़कर गगन की, देख सकूँ मन करता है ।।

मन गढ़ंत उलझनें बहुत है, फँसा हुआ मन रहता है ।
अंदर बाहर आग लगी है, बुझा सकूँ मन करता है ।।

रंगों की अपनी सुंदरता, शुभ-अशुभ में है बँधी ।
इन पर लगी जो पाबंदियाँ, हटा सकूँ मन करता है ।।

नर-नारी सब एक समान, मानव जाति में जन्म लिया ।
फिर दोनों क्यूँ हैं अलग, समझ सकूँ मन करता है ।।

जोड़ दिया है चाँद-सूरज को, अपने-अपने धर्मों से ।
दिलों में बढ़ते भेदभाव को, मिटा सकूँ मन करता है ।।

अहंकार धूमिल कर देता, भेद भी अपने परायों का ।
किसी उलझन में ना रहूँ, सुलझा लूँ मन करता है ।।

हूनर अभी जिंदा है

शिकायतें सहने का हूनर अभी जिंदा है ।
खुद को तराशने का हूनर अभी जिंदा है ॥

चंद लोगों के कहने से फर्क नहीं पड़ता ।
अनसुना करने का हूनर अभी जिंदा है ॥

ऊलजुलूल बोलना तो स्वभाव है उनका ।
सुनकर हँस देने का हूनर अभी जिंदा है ॥

बातें घुमा-घुमा कर उलझाती है दुनिया ।
सच बात समझने का हूनर अभी जिंदा है ॥

झूठ-सच के पैमाने सबके अपने अपने ।
सही बात कहने का हूनर अभी जिंदा है ॥

भीड़भरी दुनिया में भले ही गुम हो जायें ।
खुद में ही जीने का हूनर अभी जिंदा है ॥

आत्मविश्वास पूरा बटोर लिया है हमने ।
जीवन जी लेने का हूनर अभी जिंदा है ॥

व्यवधान

कई व्यवधान जीवन में, जो हमको नहीं सुहाते ।
बिन बुलाये मेहमान से, अचानक ही चले आते ।।

हिय पर लगे ये बोझ फिर, हम चिंता कर अकुलाते ।
डूबे जाते दुख में हम, वे हमको बहुत सताते ।।

चाहत अपनी भी रहती, दिनरात सोच सकुचाते ।
खुद घुटे-घुटे अरमान, ये मन को ही खा जाते ।।

मन का बढ़ जाते बोझ फिर, इनसे पार नहीं पाते ।।
सोचते हम दिन रात है, हमको बहुत चिढ़ाते ।

मन की जब ना तैयारी, इसलिए ये नहीं भाते ।
सब खेल रहे हैं मन का, ऐसा मन को समझाते ।।

रहे अपने मन अनुकूल, व्यवधान नहीं कहलाते ।
चुपचाप अपना काम कर, ये स्वयं ही निकल जाते ।।

जीवन भर का खेल ये तो, ये कब आते कब जाते ।
क्यों व्यर्थ में चिंता बढ़े, हम इनसे नहीं घबराते ।।

बासंती उन्माद

लो बजी गगन में शहनाई, बिजली नृत्य कर हर्षाये ।
घटा ने ली जब अंगड़ाई, बारिश फिर झम-झम आये ।।

छाया है उन्माद प्रकृति में, जो हरियाली लहराये ।
पल्लवित हुआ है नव जीवन, वसुंधरा भी दिखलाये ।।

लो नव कोपलें भी खिल उठी, बगियाँ भी जश्न मनाये ।
मधुलिका फिर मकरंद पिये, तितलियाँ भी मंडराये ।।

अमुआ की डालियाँ लदी हुई, मोर भी नाच दिखाये ।
सुगंधित हवा से गलबहियां, लहरें सुगंध फैलाये ।।

चीं चीं कर चिड़िया शोर करे, पशु-पक्षी भी इतराये ।
हर तरफ छाया है मधुमास, प्रियतम को पास बुलाये ।।

रंग बिरंगे पल्लवित फूल, सबको ही सदा लुभाये ।
कोयल करती है कुहू कुहू, राग सुरीली वो गाये ।।

पपीहे करे पीहू पीहू, जंगल में मंगल लाये ।
हर्षोल्लास में प्राणी ये, सभी झूमे नाचे गाये ।।

नदियाँ बहती है सरल-तरल, पहाड़ों से लिपट जाये ।
पेड़ों की झुक गई डालियाँ, धरती से मिलने आये ।।

मोर तो निज पंख फैलाकर, सुंदर सी छवि दिखलाये ।
मानव-मन हर्षित है अपार, वर्षा उल्लास भी ले आये ।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

मनुष्य धर्म

आती चुनौतियां रोज है, सुलझाते हम रहते हैं ।
जितना जाने जीवन को, हम अनजाने रहते हैं ।।

जानते यह भ्रम जाल है, फिर भी उलझे रहते हैं ।
आशा निराशा के झूले, और कुंठा में रहते हैं ।।

नश्वर सांसे हैं धरोहर, फिर भी गर्व में रहते हैं ।
जानते हुए अनजाने से, हम जाल बुनते रहते हैं ।।

जो होता रहता है घटित, विस्मृत होते रहते हैं ।
करते फिर भी जद्दोजहद, उसमें फंसते रहते हैं ।।

क्यों हुआ कैसे हुआ यह, प्रश्न दिमाग में रहते हैं ।
क्या हुआ कैसे होगा, चिंता में खोए रहते हैं ।।

चलो मूकदर्शक बनकर, शांत विचरण करते हैं ।
आनी- जानी चीजों की, क्यों परवाह करते हैं ।।

मानव जन्म मिला मुश्किल से, अब क्यों व्यर्थ करते हैं ।
एक दूजे का ख्याल रखें, बस मनुष्य धर्म में रहते हैं ।।

ज्योति स्वरूप बेटियाँ

अँगना जब ज्योति जली, नहीं खुशी का छोर ।
रही अपलक निहारती, जब देखा उस ओर ।।

तोहफा जो ईश्वर का, बनी हमारी शान ।
तेज उजाला भर गया, जीवन प्रकाशमान ।।

घर भर में यह नाचती, जलती है दिन रात ।
हर कोना रौशन करे, मिले खुशी सौगात ।।

जब भी धुँध छाने लगे, मिले तुरंत निदान ।
अँधकार से मुक्त करे, मिटे नामो निशान ।।

ये जहाँ वहाँ रौशनी, ये प्रकाश का स्त्रोत ।
रखना इसे सहेज कर, जले ज्योत से ज्योत ।।

इक घर से घर दूसरा, करती रहे रौशन ।
हम सबका प्रयास सतत, हो नहीं अब शोषण ।।

ज्योति रूप है बेटियाँ, देती रहें उजास ।
ऊर्जा रूप तेल भरें, करते रहें प्रयास ।।

जल रही क्रोध की ज्वाला

जल रही है क्रोध की ज्वाला, शमन इसका नहीं होता ।
समझ नहीं कोई इसे रहा, दिल यही देखकर रोता ।।

बढ़ा अविश्वास चारों तरफ, उड़ गया है हाथ का तोता ।
आँखों से हुई नींद ओझल, दिल यही देख कर रोता ।।

भरे हैं हिय ईर्ष्या-द्वेष से, प्रेम कहां कैसे होता ।
दिल का छिन गया है अब चैन, दिल यही देख कर रोता ।।

दिल में चुभते तरकश गहरे, मानव नफरत ही ढ़ोता ।
वैमनस्य है सबके मन में, दिल यही देख कर रोता ।।

बहिन-बेटी की नहीं है सुरक्षा, फिर भी दर्द कहाँ होता ।
घर बाहर ऐसा ही आलम, दिल यही देख कर रोता ।।

भेदभाव का दौर चल रहा, अब मनुज खुश कहाँ होता ।
नफरत देती दिल पर दस्तक, दिल यही देख कर रोता ।।

अंधी दौड़ में दौड़ते सब, अब मनुज खा रहा गोता ।
लालच का ही खेल चल रहा, दिल यही देख कर रोता ।।

संवेदनाएँ गुम हो गई

संवेदनाएं गुम हो गई, मानव बन गया दर्शक ।
मूक रहकर अब बन गया है, खुद मानवता का भक्षक ।।

सेंक रहा रोटी अपनी, खुद में गुम हुआ है आज ।
हाल पड़ोस का जानने भी, देता ना कोई दस्तक ।।

हावी हुआ सब पर स्वार्थ सब पर, आँखें चुराते हैं लोग ।
सर पर बोझ तो अहं का है, फिर भी ताने है मस्तक ।।

हर व्यक्ति अब स्वयं अपनी ही, रक्षा कर लेना आज ।
लाज ही लूट ले गया है, जो बना कभी संरक्षक ।।

चोला पहना मानवता का, खुद मानवता शर्मसार ।
अब तो वह भी ढूँढ़ रही है, कहाँ गया उसका रक्षक ।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

मानवता गुम हमारी

सबसे प्यारी सबसे न्यारी, चीज हो गई गुम हमारी ।
मनमोहिनी साथी हमारी, हुई मानवता गुम हमारी ।।

प्रेम और सम्मान बढ़ाती, होती थी वह चाह हमारी ।
पहले मिलने को थे आतुर, यही बातें हैं गुम हमारी ।।

अंतरमन के तार जुड़े थे, वही निकटता शान हमारी ।
साथ निभाना, मिलजुल रहना, अब ये सरलता गुम हमारी ।।

भेदभाव की बात छोड़कर, अपनापन थी सीख हमारी ।
सच्ची बात सहज कहने की, हिम्मत हो गई गुम हमारी ।।

शर्म-लाज सब हवा हो गये, खुदगर्जी की अब तैय्यारी ।
झूठ-फरेब ही बिक रहा है, सज्जनता हुई गुम हमारी ।।

खोकर नकली चमक दमक में, अब आडंबर शान हमारी ।
इक दूजे पर दोषारोपण, असली कला क्यूँ गुम हमारी ।।

मानव पूछ रहा मानव से, भलमनसाहत कहाँ हमारी ।
यहाँ वहाँ सब ढूंढ़ रहे हैं, हुई मानवता गुम हमारी ।।

पछतावा

फूटे अंकुर भावों के, सुन्दर मन की डाली से ।
मन बहुत हर्षित हुआ था, नयन मिले मतवाली से ।।

मिल जतन किये दोनों ने, हर दिन लगे दिवाली से ।
जीवन बगियाँ महक उठी, मिलकर बस हरियाली से ।।

अमृत दोनों पी रहे थे, सदा आँखों की प्याली से ।
लगता था पूरा जीवन, बीत जाये खुशहाली से ।।

क्रोधी भौंरा ले आया, परागकण इक डाली से ।
ईर्ष्या के फूटे अंकुर, पोषण लोभी माली से ।।

स्वार्थ की फफूंद लग गई, मिली ना दवा माली से ।
सींचा नहीं फिर प्रेम जल, सुमन सूख गये डाली से ।।

तेज धूप गलतफहमी की, व्यंग्य-वर्षा जुगाली से ।
क्या कर सकते निकल चुकी, अब गोलियां दुनाली से ।।

पछतावा ही हाथ रह गया, दूर हुए मन खाली ।
उजड़ा उपवन हरा भरा, सींचा जिसे खुशहाली से ।।

सहनशील माटी

धीरज धर सहनशील माटी, विपदाएँ वो सह जाती है ।
विविध रूप लेती जीवन में, नित नवीन पाठ पढ़ाती है ।।

लड़ाई अस्तित्व की लड़कर, सख्त नरम बन जाती है ।
सुख-दुख के खेल अनूठे, धर चुप्पी सब सह जाती है ।।

कभी सागर की गहराई में, कभी हिमशिखर बस जाती है ।
कभी तराई में झरने संग, नदियों संग बह जाती है ।।

रहती कभी शांत झील में, तूफान हवा में बन जाती ।
मूरत बन कर सर आँखों पर, पांवों तले रौंदी जाती है ।।

कभी भव्य प्रासाद बने तो, कभी झोपड़ी बन जाती है ।
पक्षी बन रहती मुंडेर पर, तन प्राणी का बन जाती है ।।

रहे नभ, थल, हवा, पानी में, अपना वजूद तो रखती है ।
माटी चाहे किसी रूप में, ये दंश सभी सह जाती है ।।

घुल मिलकर रहना संग में, जीवन का गुर सिखाती है ।
माटी की है बात निराली, सभी के संग रह जाती है ।।

मौलिक ईधन

होता समय परिवर्तनशील, कुछ भी स्थायी नहीं रहा ।
सीख सदैव याद रखना है, भूल जाएँ जो भी सहा ।।

आज घटना घटित हुई है, ये तो जीवन मापक है ।
आगे कैसा होगा जीवन, थोड़ा इसका सूचक है ।।

हाथ की रेखाएं क्या कहें, बस ये तो मार्ग दर्शन है ।
जितना समझेंगे हम इनको, यही तो भाव मंथन है ।।

अपने सुकर्मों से बदल दें, रेखाएं निज हाथों की ।
भावों का जब मंथन हो, बदले लकीरें माथे की ।।

जीवन में आते जो भी सुख, उनको ही आवक मानें ।
देखें केवल दुखों की सूची, इन्हें जीवन घटक जानें ।।

क्षमा समतामय भाव हमारे, यह तो नये आयाम दे ।
रहे ध्यान सदैव भावों पर, विचारों को विश्राम दे ।।

मूक दृष्टा बनकर देखें, जो भी अपने जीवन को ।
सरपट दौड़े उसकी गाड़ी, भरते मौलिक ईधन को ।।

हमारी हर बात तुम्हारी

हमारी हर बात तुम्हारी, सिलसिला यही सालों का ।
हँसते-हँसते बीते जीवन, हम दोनों दिलवालों का ।।

जो पलक झपकते बीत गया, रीत गया सो गिना नहीं ।
आकाश, समुद्र पहाड़ नदियां, कितनी नापी पता नहीं ।।

बात बात में उलझे रहना, मानी ना तकरार कभी ।
जीवन बना रहता जीवंत, बचपना बरकरार अभी ।।

बनकर बच्चे ही तुम रहना, रखेंगे हम भी लड़कपन ।
खट्टी-मीठी बातों के संग, नहीं आयेगा बड़प्पन ।।

मिलता नहीं अपार कभी तो, कमी कभी भी रही नहीं ।
साथ मिला है कदम-कदम पर, दूरियां कभी खली नहीं ।।

सोच समझ में तुम हो गहरे, समझ रिश्तों की मेरी भी ।
निभा ही लिया मिलजुलकर, रही मुसीबत कैसी भी ।।

एक छोर पकड़े रखना बस, दूजा पकड़े रहूँ सबल ।
दो पाट जब हों मजबूत तो, बहती रहती नदी सरल ।।

कभी हिस्से अमृत आ जाये, पीना पड़ता कभी गरल ।
हो गहराई सागर सी बस, रिश्ते रहते तभी तरल ।।

ऐसा ही अब बीते जीवन, आज हमको जैसा मिला ।
कोई भी खेद नहीं मन में, नहीं कोई शिकवा गिला ।।

कहते क्यों है जीवन दुष्कर, कौन कहे ये सरल नहीं ।
थोड़ा रख लें धैर्य अगर तो, मुश्किल कोई सफर नहीं ।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

मोहपाश

प्यार के सागर में डूबे, गहराई में हम खो गये ।
प्यारे से इस अहसास में, हम कैसे कब गुम हो गये ।।

मोहपाश में उनके बँधे, प्रेम के अनुबंध हो गये ।
रही नहीं फिर हमको खबर, हम कैसे कब गुम हो गये ।।

स्वप्न लहराये आँखों में, उन लहरों में हम खो गये ।
इंद्रधनुषी उन ख्वाबों में, हम कैसे कब गुम हो गये ।।

हम खींचे ही चलते गये, उस आकर्षण में खो गये।
कुछ भी नहीं था भान हमें, हम कैसे कब गुम हो गये।।

बिन कहे सब कुछ कह दिया, एक दूजे के हो गये ।
भविष्य के हसीन वादों में, हम कैसे कब गुम हो गये ।।

प्रेम की गूँगी जुबान थी, भाव विभोर हम हो गये ।
अभिव्यक्त किये बिना ही कुछ, हम कैसे कब गुम हो गये ।।

बिना कहे सब कुछ कह दिया, इक दूजे के हम हो गये ।
भविष्य के मधुर वादों में, हम कैसे कब गुम हो गये ।।

निष्काम कर्म जब अपना हो

पाने की माला जपना हो, जो निज स्वार्थ ही रटना हो ।
स्वतः भंवर में फँस जाये, जब धन कमाना सपना हो ।।

सांसारिकता में भटका हो, जो भेद भाव में अटका हो ।
स्वतः विषयों में फँस जाये, जब अहं तुष्टि ही सपना हो ।।

अपनों की माला जपना हो, रिश्तों का ध्यान रखना हो ।
स्वतः संबंध खिल जाते, जब प्रेम भाव ही सपना हो ।।

जब स्वयं भाव परिवर्तन हो, अध्यात्मिकता का अंजन हो ।
स्वतः ज्ञान फिर मिल जाये, जब लक्ष्य पाना ही सपना हो ।।

जो बड़ों का मान रखता हो, सिर्फ सेवा सुश्रुषा करता हो ।
स्वतः फिर विनय विवेक रहे, जब परोपकार का सपना हो ।।

परहित जब लक्ष्य अपना हो, अनुकंपा को भी जपता हो ।
स्वतः परमार्थ भी फल जाये, जब कर्म भाव ही सपना हो ।।

कर्मों के क्षय की क्षमता हो, जब छोड़ दी सारी ममता हो ।
मोक्ष मार्ग फिर दिख जाये, जब निष्काम कर्म अपना हो ।।

रिश्ते अमरबेल है

रिश्ते कभी होते मधुर, कभी तल्ख हो जाते हैं ।
ये तो अमरबेल बन, हृदय से लिपट ही जाते हैं ।।

कभी मंदाकिनी बन कर, शांति से बहे जाते हैं ।
बनकर अलकनंदा यही, दिल में शोर मचाते हैं ।।

कश्मकश में पड़ कर यही, सूख नदी बन जाते हैं ।
कभी मुखर होकर ये तो, दिलों में बाढ़ लाते हैं ।।

कभी कभी खुली हवा में, खुलकर साँस लेते हैं ।
घुटकर कभी यही दिल में, गहरे भी हो जाते हैं ।।

गुस्से में बनते ताने, कभी प्रेम बरसाते हैं ।
कभी ज्वालामुखी बन कर, विस्फोटक हो जाते हैं ।।

रिश्ते रेशम के धागे, सदा उलझते रहते हैं ।
धैर्य पूर्वक सदैव, इन्हें हम सुलझाते जाते हैं ।।

जिन से रिश्ते बन जाते, भूले न कभी जाते हैं ।
रह-रहकर अकसर ये तो, यादों में बस जाते हैं ।।

हौसलों से पंखों की पहचान

हौंसलों से पंखों की पहचान हो गयी ।
उड़ान फिर पंछी की आसान हो गयी ।।

आत्मविश्वास जिन्होंने उर में समेटा ।
परेशानियाँ उनसे परेशान हो गयी ।।

पलटकर जब वो दिखाने लगे थे आँखें ।
दुश्मनों की जुबानें भी बेजान हो गयी ।।

कुछ अल्फाज निकलने लगे जब मुँह से ।
गजलें फिर उनकी भी कद्रदान हो गयी ।।

कौन कहता है सिर्फ़ गम हैं जिंदगी में ।
खुशियाँ कुछ अब हमारी भी शान हो गयी ।।

कर दी घुसपैठ कोरोना वायरस ने ।
जिंदगी की सबको अब पहचान हो गयी ।।

फिर से समझाये प्रकृति ने फलसफे ।
थी सशक्त पहले भी अब बलवान हो गयी ।।

कुछ लम्हे जीवन में "मधु" आये ऐसे ।
फिर अपनी भी खुद से पहचान हो गयी ।।

जीने की कला

नित नए काम की अलख जगाया कीजिए ।
हौसले बुलंदकर मंजिल तक जाया कीजिए ॥

मुश्किलें तो राह में रोड़े ही अटकायेगी ।
मुकाबला करने का मानस बनाया कीजिए ॥

अच्छे बुरे काम का विचार तो करना पड़ेगा ।
सच्चाई पर रहें अडिग निश्चय किया कीजिए ॥

लोग तो जीवन में हर तरह के मिलते हैं ।
सही लोगों के साथ रहें, साहस किया कीजिए ॥

काम करने की सीमा, कोई उम्र तय नहीं करती ।
सीमाएँ तोड़ उम्र की, बिंदास जिया कीजिए ॥

असफल हो जाना तो, सफलता की सीढ़ी है ।
लांघकर इस सीढ़ी को, ऊपर जाया कीजिए ॥

जीवन जीने की कला, सीखना तो जरूरी है ।
कर्तव्यबोध जगाकर, जीवन जिया कीजिए ॥

मनु जन्म मिला

ये मुश्किल से मनु जन्म मिला,
खुशी का अब एक पुष्प खिला।

एक एक पल की कीमत है,
समझो तो बनती किस्मत है।

ये काल गुजरता रहता है,
हर कर्म हमारा फलता है।

कर्मों की महिमा रहे बड़ी,
सुकर्मों की बनती है लड़ी,।।

हम क्यों सोचें जो लोग कहे,
लोगों की बातों में रोज बहें।

नाहक मन को दूषित करना,
क्यों हमको यूँ हर पल मरना।

कर्म सभी अपने साथ चले,
पर का किया नहीं हमें फले।

क्रमशः

उसकी करनी उसका फल है,
उनकी बातें ढोना मल है।।

जो बैर भाव बढ़ता मन में,
दूषित प्रवाह होता तन में।

खुले नहीं पूर्वाग्रह-बेड़ी,
यही सोच की रेखा टेढ़ी।।

खोलें जकड़ी हुई बेड़ियाँ,
फिर मिले खुशियों की ढ़ेरियाँ।

बिगड़े हुए पल सुधरे नहीं,
करें प्रयास कल बिगड़े नहीं।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

शुद्ध धर्म की राह चुन

सबसे बड़ा मानव धर्म है,
शुद्ध धर्म की राह चुन।
फल पाने की चाहत में,
केवल ताने बाने ना बुन।।

बहुत राह भटकाने वाले,
सबको तू हँसकर सुन।
ना पड़ना व्यर्थ बातों में
चलना बस अपनी धुन।।

सातों स्वर हमें लुभाते,
सही समय में सही गुन।।
खुद ही अंतर्मन बोलेगा,
अंतरनाद का स्वर सुन।

चलते रहें कर्म-पथ पर
कर्त्तव्य-परायणता गुन।।
लुभाते बहुत आडंबर ये,
तू नैतिक मूल्यों को चुन।

हैं क्षणिक सुख बहुतेरे,
निष्काम कर्म सच्ची धुन।
मिले सफलता खुद आकर
तू तो अपनी मंजिल चुन।।

चाँद सितारे क्या छूना

चाँद सितारे क्या छूना,
आगे आसमान बाकी है।
उर्ध्वगमन जो है रफ़्तार,
आकाश गंगाएं बाकी है।।

हौंसले रखना है बुलंद,
अभी कई उड़ानें बाकी है।
हाथ की रेखाएँ क्यूँ देखें,
अभी और बनाना बाकी है।।

लेते रहे हैं अनंत ज्ञान,
अभी चलना उस पर बाकी है।
कारवां तो शुरू हुआ है,
अभी तो मंजिल बाकी है।।

सेवा की नहीं कोई सीमा,
अभी कई काम बाकी है।
एक जन्म से क्या होगा,
अभी जन्म बहुतेरे बाकी है।।

नित नयी उमंग

नित नयी उमंग भर ।
धीरता यूँ मन में धर ।।

खुद को तू प्रबल बना ।
नित नई हो कामना ।।

सच सदा ही रंग भर ।
साथियों को दंग कर ।।

लक्ष्य पर ही ध्यान धर ।
कार्य अपना जानकर ।।

लोग क्या कहेंगे हमें ।
बात पर ही क्यूँ जमें ।।

ये कोई विषय नहीं ।
चिंतन की कोई लय नहीं ।।

नेकियों के बीज बो ।
पाप पुण्य संग में ढ़ो ।।

फल की कामना ना कर ।
बुद्धिमान हो के विचर ।।

सफलता का बगीचा

जीवन को सरल खुद बनाना पड़ता है ।
रिश्तों को सहज खुद बनाना पड़ता है ।।

किसी के भरोसे काम चलता है नहीं है ।
अपना काम सदा खुद करना पड़ता है ।।

थाली आराम से परोसी नहीं मिलती ।
सुविधाएं पहले खुद जुटाना पड़ता है ।।

खामियां देखने से जीवन नहीं चलता ।
खुद के रास्ते तो खुद बनाना पड़ता है ।।

अपने आप तो रिश्ते निभ नहीं जाते ।
एक एक रिश्ता खुद सजाना पड़ता है ।।

जीवन हमें यूँ ही अच्छा नहीं लगता ।
कुँठाएँ मन से खुद हटाना पड़ता है ।।

सफलता का बगीचा यूँ ही नहीं सजता ।
एक एक पौधा खुद लगाना पड़ता है ।।

संस्कृति में विकृति

हो गया है संस्कृति में विकृति का मिलन ।
हल कहाँ निकलेगा करके रावण दहन ।।

विकृत मन की सोच में, अच्छाई दफन ।
पूरे वर्ष की त्रुटियाँ, फिर रावण दहन ।।

समारोह करते बड़े, होते हैं कथन ।
व्यवहार सुधरे कहाँ, सिर्फ रावण दहन ।।

लेते कहाँ सीख हम, करते नहीं मनन ।
अगले साल कर लेंगे, फिर रावण दहन ।।

उपक्रम ये अनोखा, बुराइयों का दमन ।
संताप मन का हल्का, यह रावण दहन ।।

कलयुग में रावण के, मुखौटे अनगिनत ।
रावण खुद ही कर रहे, अब रावण दहन ।।

अब तो कुछ ऐसा हो, दिल से करें जतन ।
पैदा ना हो रावण, रुके रावण दहन ।।

मोह पतंग

उड़ा ना मोह पतंग ।
इसके विविध है रंग ।।

पेच लड़ाने के ढ़ंग ।
बेकार में करते तंग ।

कर देते ये रंग में भंग ।
जीवन नहीं है जंग ।।

मन है खुला अनंग ।
भर जीवन में उमंग ।।

विश्वास की हो सुरंग ।
रख अपनों को संग ।।

खुशियों की बजे मृदंग ।
उल्हास की उठे तरंग ।।

आनंद के भर कर रंग ।
चलते रहो सबके संग ।।

दीपक की ख्वाहिश

मिट्टी से बना हूं मैं तो,
मिट्टी में मिल जाऊंगा।
जब तक हूँ अस्तित्व में,
रौशनी कर जाऊंगा।।

तम छाया है हर तरफ,
सात्विकता बढ़ाऊंगा।
विवेक को जगा कर मैं,
रौशनी कर जाऊंगा।।

विनय रूपी भरूँ तेल,
धैर्य की बाती बनाऊंगा।
सतत ज्ञान बढ़ाकर मैं,
रौशनी कर जाऊंगा।।

उत्साह है मेरे अंदर,
सभी में भर जाऊंगा।
ख्वाहिश बस एक मेरी,
रौशनी कर जाऊंगा।।

वसंत आया दूल्हा बन

वसंत आया दूल्हा बन,
वासंती परिधान पहन।
उर्वी उल्लसित हो रही,
उस पर छाया आज मदन।।

पतझड़ ने खूब सताया,
प्रियतमा बन गई विरहन।
पर्ण-वसन सभी झड़ गये,
किये क्षिति ने लाख जतन।।

ऋतुराज ने उसे मनाया,
नव कोपलें, नव पल्लव।
बनी धरा नव्य यौवना,
मही मनमुदित, है मगन।।

वसुंधरा पर हर्ष छाया,
सभी मनाते हैं उत्सव।
धरती सोलह श्रृंगारित।
लग रही है आज दुल्हन।।

नोट- धरती के पर्यायवाची-उर्वी, क्षिति, मही, वसुंधरा, धरा

नारी है जगत जननी

नारी हो तुम जगत जननी
सारा विश्व तुझ में समाया।
कोई नहीं है तुम से बेहतर
नारी नाम में नर समाया।।

धरा सी धैर्यवान हो तुम
दिल में सागर है गहराया
घन सा आशीर्वाद बरसाती
जल सी हो शीतल छाया

घर की शांति और मर्यादा,
सदा ही तुमने उसे बचाया।
ताकत तुम पूरे परिवार की,
तुम खड़ी हो बनकर साया।।

मातृत्व लुटाती हो तुम सदा,
ममता भाव ने तुम्हें उठाया।
तुम्हीं से है सबकी पहचान,
चैतन्य ही तुझ में समाया।।

प्यारा सा मीत

हमको सबसे प्रीत हो,
जीवन एक संगीत हो।
साध लेंगे सुर भी सात,
संग प्यारा सा मीत हो।।

कभी सताये खालीपन,
रहता कभी काम में मन।
वक्त पर हो जाते काम,
संग प्यारा सा मीत हो।।

जीवन कभी ले इम्तिहान,
कभी सफलता के सोपान।
मुश्किलें हो जाती आसान,
संग प्यारा सा मीत हो।।

क्रमशः

रहते कभी उहापोह में,
कभी निर्णय के दौर में।
बन जाती हर एक बात,
संग प्यारा सा मीत हो।।

सागर सुख के ले हिलोरें,
चाहे दुख के पहाड़ घेरे।
रहें सदा हम एक साथ,
संग प्यारा सा मीत हो।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

मनुहार का फूल

खिला फूल मनुहार का,
रिमझिम सी बरसात में।
सजन कभी ना रूठना,
रिमझिम सी बरसात में।।

बीती सो बिसार देना,
बीते नहीं दिन रार में।
गिले शिकवे मिटा देना,
रिमझिम सी बरसात में।।

मौसम बहुत हसीन है,
खिले फूल हर बाग में।
निहारेंगे मिलकर दोनों,
रिमझिम सी बरसात में।।

क्रमशः

काले बादल घिर आए,
लगते डरावने रात में।
कसकर हाथ थाम लेना,
रिमझिम सी बरसात में।।

जो चाहो सो मिल जाये,
खुशियाँ आये हर हाल में।
गले लगा लो आज हमें,
रिमझिम सी बरसात में।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

खुशियाँ बढ़ती बाँटने से

आँखे बिना वजह तो,
कभी नम नहीं होती।
चुनौतियाँ हैं अपार,
कभी कम नहीं होती।।

भावों का उछाल है,
दिल के समंदर में।
दुख की लहरें उठती,
कभी कम नहीं होती।।

रखना नहीं पकड़कर,
दिल में कभी भी बात।
मुश्किलें तो बढ़ती हैं,
कभी कम नहीं होती।।

क्रमशः

सुख के गलियारों में,
झाँक लेना जरा तुम।
दुख की गलियां तो,
कभी कम नहीं होती।।

खुशी भी मिलती रहे,
हमें सदा अनगिनत।
बढ़ती यह बाँटने से,
कभी कम नहीं होती।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

दो दिलों का रिश्ता

उल्लास भरा हो आसमान,
बस छू लेने का हो अरमान।
फिर जुड़े रहें दिल के तार,
सतत बहती नेह की धार।

हो पूरा दिल में विश्वास,
सह ले आपस में उपहास।
नदी-धारा सा हो बंधन,
रिश्तों में प्यारा हो संबंध।

सतत धारा सा बहता हो,
मौन रहकर सब कहता हो।
सागर-जल सा अनुबंधन,
रिश्तों में गहरा हो संबंध।

क्रमशः

हुनर जुड़ने का हो एक सा,
ख्याल दिल में हो नेक सा।
बिगड़ते जब मन के भाव,
दिल पर करते गहरे घाव।

चाहे कैसी भी हो जाय बात,
दिल पर ना हो गहरा घात।
पहले टूटे मन के अनुबंध,
गरिमामय फिर ना हों संबंध।

फिर पछतावा रहता हाथ,
याद आती है हर एक बात।
रिश्तों की महत्ता घटती,
दिल से यादें नहीं मिटती।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

आधुनिक प्रेमी

प्यार की चादर जिसने तानी,
उसका कोई नहीं है सानी।
मन रहता उसका रूहानी
बाकी बातें है बेमानी।

अच्छे बुरे का भेद मिटा दे,
बातें सभी सही दिखला दे।
प्रियतम की बात सुहानी,
कद्र मीत की उसने जानी।

बने प्रेम ताकत सच्चाई,
ना होती है कभी जुदाई
कैसी भी होती नादानी,
हर मुसीबत पार हो जानी।

जीवन जीना एक कला है,
प्यार करने का हुनर जुदा है।
दोनों में घालमेल की ठानी,
वो कभी नहीं माँगे पानी।

आधुनिक प्रेमी हिम-कक्ष है,
लाभ-हानि की कला में दक्ष है।
जब दिल बने पिघलता पानी,
प्रेम की कीमत उसने जानी।।

फागुन आ गया

हर्षोल्लास था गुमशुदा,
दौर पलाश का आ गया।
गुम हुई खुशियों को लेकर,
लो फिर से फागुन आ गया।।

हर तरफ टेसू पलाश हैं,
लो उल्हास फिर छा गया।
फुहार प्रेम की लेकर ये,
लो फिर से फागुन आ गया।।

झुर्रियां देखी चेहरे पर,
तब लगा बुढ़ापा आ गया।
तोड़कर सीमाएँ उम्र की,
उत्साही फागुन आ गया।।

कोरोना घनघोर कोहरा,
एकाकीपन अब छा गया।
अब अंधेरों को चीरकर,
लो उजला फागुन आ गया।।!

पहरा गहरा था गमों का,
अवसादी मन बौरा गया।
टूटे दिल के तार जोड़ने,
लो फिर से फागुन आ गया।।

चुनौतियाँ जीवन श्रृंगार

डरना क्यूँ चुनौतियों से,
यही तो जीवन श्रृंगार।
जब भी आ जाय सामने,
बस करें सहर्ष स्वीकार।।

रखते रहे जो हौसला,
वो करते मुसीबत पार।
हिम्मत रखने वालों की,
ना होती है कभी हार।।

सफल होने के बाद में,
लगे खुशियों का दरबार।
मिलता है आत्म संतोष,
हो जाता स्वयं से प्यार।।

असम्भव जब बने सम्भव,
आता है मजा हरबार।
जीने का मिलता संबल,
हो जीवन सुखद साकार।।

तर्पण

पल पल में जीवन बदले है,
बीते पल मन को जकड़े है।
छोड़ो आते जाते पल को,
पल ये नश्वर क्यों पकड़े है।

पुष्प चढ़ाकर जिसे बहाया,
काम न जाने किसके आया।
हाथों से करवाना भोजन,
तन को लगता है फिर खाया।

जीते जी करना सब अर्पण,
नहीं जरूरत करना तर्पण।
वृद्ध जनों का मान करें सब,
हर्षोल्लास से हो समर्पण।

क्रमशः

इकदिन तो फोटो में होंगे,
तर्पण करते बच्चे होंगे।
इसका महत्व आज समझ लो,
फिर ना जानें कब वे होंगे।

परोपकार करने की ठानें,
दया धर्म का महत्व जानें।
जिसे जरूरत वही मदद है,
वरना दान निरर्थक मानें।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

वर्षा

गीतिका

पावन धरा को सींचने, ये नीर बरसा ही करे ।
जो काम करती संत सा, ये नित्य वर्षा ही करे ।।

है सादगी इसमें सदा, ये भेद करती है नहीं ।
आदान करती नीर का, दाता बनी नेकी करे ।।

पूछे नहीं ये जात को, सबको सदा देती रही ।
जो भेद वर्गों का नहीं, विपदा सभी की ही हरे ।।

आशा इसकी रहे सदा, जाती सभी के पास है ।
पालन करे ये मातवत, ये ध्यान सबका ही धरे ।।

जो लोभ में बांधे रखा, विकराल बनती है यही ।
फिर लील लेती प्राण को, जब बाँध टूटा ही करे ।।

संचार प्राणों का सदा, सबकी बढ़ाती संपदा ।
सम्मान से रखना इसे, ये आज तैयारी करें ।।

संभाल रखना नीर को, आता सभी के काम ये ।
नित त्याग अपने स्वार्थ को, रक्षा सदा इसकी करें ।।

वादियाँ

गीतिका

वादियां जो आज देखो, बोल के जैसे बुलाती ।
डाल पाती बाँचती है, प्रेम की ये धुन सुनाती ।।

सावनी बौछार हिय में, हर्ष के ही भाव लाती ।
ये हवायें आज देखो, बाँह खोले पास आती ।।

बन घटायें आज आयी, घुमड़ के ये बोल बोले ।
आज बरसे जोर से जो, मीत का संदेश लाती ।।

आँख प्रीतम सी दिखे है, जो झपक बिजली रही है ।
आँख आँसू जो भरे हैं, आज कैसे देख पाती ।।

प्रीत की बिजली चमकती, भावना मेरी उमड़ के ।
आज मन में झूमती जो, सावनी ये राग गाती ।।

काल कोई देखती क्या, कामना हिय में घुमड़ती ।
जो घटा संदेश लायी, कान में कह आज जाती ।।

साँझ प्रातः साथ मेरे, एक है ये प्रीत अपनी ।
छीन सकता ही नहीं ये, भाव अपना प्रेम थाती ।।

पिता

गीतिका

मैं पिता का अंश हूँ जो, बीज अब तक फल रहा है ।
एक दीपक आस का जो, आज तक यह जल रहा है ।।

नेकियों के बीज बोना, जो सदा कहते रहे थे ।
दे गये यह भाव हमको, रोज मन में पल रहा है ।।

सोच रखना रोज हितकर, जो हितैषी काम कर दे ।
विश्व में करना भला बस, रोज दिल में चल रहा है ।।

ध्यान रखना आज देखो, सत्य पर मत आँच लाना ।
सत्य पर जो वार करता, आज मनु वो ढल रहा है ।।

कामना जो आज करते, रोज सब हमको मिले बस ।
भाव जो ऐसा रखे मनु, आज हमको छल रहा है ।।

टाँग खींचे एक दूजे की, उन्हें फिर दूर रखना ।
भावना मिल काम करना, रोज अच्छा हल रहा है ।।

मार्ग जो हमको दिखाया, आज भी वो ठीक लगता ।
रोज जीवन में बहार, आज पूरा बल रहा है ।।

आज की नारी

बेचारी-अबला नहीं, आज देश की नारी ।
नारी से ही पुरुष है, पुरुष की शक्ति नारी ॥

नारी से ही परिवार, परिवारों से समाज ।
हाथ में कमान इसके, घर चला रही नारी ॥

वृद्ध-बाल सब आश्रित, घर की खैवनहार ।
रिश्तेदारी निभा रही, यही आज की नारी ॥

पुरातन से आज तक, रही डंके की चोट ।
घर-बाहर सभी काम, संभाल रही नारी ॥

रानी लक्ष्मीबाई तुम, आज की मेरी कोम ।
लहराया परचम सदा, तुम भारतीय नारी ॥

ममता समता की धनी, विनय विवेक के साथ ।
ज्ञान का दीप प्रज्वलित, उजाला भरती नारी ॥

हर कला में निपुण रही, करे हर क्षेत्र में काम ।
बौरायी मृगतृष्णा में, नर की होड़ में नारी ॥

समझना खास खुद को, हो मित्रवत व्यवहार ।
कंधे से कंधा मिलाकर, चले पुरुष संग नारी ॥

चिंतन का काल

आल्हा छंद

काल मिला हमको चिंतन का, सोच समझकर करना काम ।
जो भी सोचें समझें पहले, जीवन की उपयोगी शाम ।।

मानव जाति पड़ी संकट में, हाहाकार करे हर ग्राम ।।
कोरोना सबको सिखलाता, एक रहो मिल कर हो काम ।

पहले सब हिलमिल रहते थे, आज अकेले बीते शाम ।
जान पड़ी है अब सांसत में, सूझे क्या अब कोई काम ।।

बदला काल यही अब देखो, रोजाना करना व्यायाम ।
बदलो अब तो जीवन शैली, आवश्यक है अब ये काम ।।

साफ सफाई ज्यादा रखना, सासों पर करना है ध्यान ।
ऐसी है ये अलग बिमारी, जिंदा रखना अपनी जान ।।

साँसों का सौदा होता है, देखें होती जीवन शाम ।
दूर रहो पर मिलकर रहना, आना हमको सबके काम ।।

जीवन जीना एक कला है, सीखें इसको लेना काम ।
रह जायेगी कोरी यादें, लेंगे सब अपना फिर नाम ।।

हर सीमा पर डटी है नारी आल्हा छंद

हर सीमा पर डटकर रहती, नारी उसका कहते नाम ।
पूरा करके ही दम लेती, चाहे कैसा भी हो काम ॥

दोनों कुल की लाज बचे बस, तब तो सार्थक नारी नाम ।
सीखा बचपन से ही उसने, कैसे आना सबके काम ॥

संस्कारी रहती है नारी, शाम सुबह घर में है नाम ।
बन आये जीवन यापन की, बाहर के सब करदे काम ॥

हार नहीं वो माने जानो, रात दिवस वो करले काम ।
प्रिय का साथ सदा मिल जाये, नारी हिय में फिर आराम ॥

जीवन भर वो करती सेवा, उसके बच्चे लेते नाम ।
कौन कहे कमजोर बनी वो, करती रहती हरदम काम ॥

घर को स्वर्ग बना दे ये तो, रहती घर की बन के आन ।
वरना दुख सब पर ही आते, जिस घर पाती वो अपमान ॥

नारी का बस ये है नारा, देना उसको पूरा मान ।
नित देखो उसकी दिलदारी, पाओ घर में सब सम्मान ॥

..... ☆ ☆ ☆ .....

सरस नदी नेह की

सरस नदी एक नेह की, अंतस मन में बहती है ।
अपना रास्ता स्वयं सरल, वही बनाती रहती है ।।

सीधे हृदय के बीच से, होकर सदा निकलती है ।
जीवनदायी सदा रही, पोषण करती रहती है ।

पवित्र स्त्रोत रहे इसके, सब आकंठ डूबे हुए ।
अनकही एक डोरी में, यही सबको बांधे हुए ।।

जिसे देखकर हर कोई, प्रसन्न होता रहता है ।
मन के कोने कोने में, आल्हादन ही रहता है ।।

चाहत सबके मन की है, सभी यही तो कहते हैं ।
रास्ता लेकिन है मुश्किल, ये भी सुनते रहते है ।।

लगाव चिकनी मिट्टी सा, जो बांध कर नहीं रखते ।
नेह के इस आनंद का, फिर स्वाद ले नहीं सकते ।।

जब तक कचरा फिजूल का, साफ नहीं हो जाता है ।
मन की शुद्धि करके स्वतः, सभी बह नहीं जाता है ।।

प्रश्न खड़े कर बंधन के, और नहीं अनबन पालें ।
घेरे इस पर तर्कों के, तरकश कचरा मत डालें ॥

धारा प्रवाह बना रहे, उन्मुक्त होकर ही बहे ।
उन्माद सा मन में रहे, नेह सरल तरल ही बहे ॥

..... ☆ ☆ ☆ .....

गुरुवर सरल बस ऐसे हों

गुरुवर सरल सभी ऐसे हों, मिला सहज धन वैसे हों ।
ज्ञान अमृतमय बरसा कर वे, जीवन रस भर देते हों ।।

कच्ची मिट्टी गढ़ देते हों, आकार सुंदर देते हों ।
निखार कर पूर्ण व्यक्तित्व, मन विकार हर देते हों ।।

दृष्टि ममतामयी रखते हों, सृष्टि अलग ही रचते हों ।
प्यार की वृष्टि कर देते वे, खुशियों से भर देते हों ।।

पारंगत सभी कलाओं में हों, वो निपुण हर बात में हों ।
एकाग्रता आये शिष्य में, ध्यान लक्ष्य पर देते हों ।।

विचक्षण बुद्धि रखते हों, विलक्षण ज्ञान भरते हों ।
दुष्कर राहें समझा कर वे, मंजिल दिखा भर देते हों ।।

बिना कहे बात समझते हों, शिष्यों के हिय बसते हों ।
अनकही पहेलियाँ बूझ कर, बता जीवन गुर देते हों ।।

गुरु में ईश सभी दिखते हों, समस्याएँ हर देते हों ।
हमको हमसे ही मिलवाकर, ज्ञान प्रखर कर देते हों ।।

प्रकृति का महत्व

सप्त सुरीला संगीत है, इस प्रकृति का हर तत्व ।
सजा देता जीवन राग, भर देता है ममत्व ।।

एक एक सुर का अपना, अलग ही अंदाज है ।
समझना हमें ही पड़ेगा, अब तो इसका महत्व ।।

समय आने पर सब कुछ, जता देती ये हमें ।
कई गुना ज्यादा राज, अनंत शक्ति है इसमें ।।

कभी हो जाता आभास, पा लिया हमने सत्व ।
पर कुछ नहीं हम जानते, कितना इसका महत्व ।।

हमारे ज्ञान विज्ञान भी, इसके आगे नतमस्तक ।
अंदर तक हिल जाते हम, जब देती है ये दस्तक ।।

आपदाएं हमको बताती, इसके बल का घनत्व ।
यह कितनी बलशाली है, कितना इसका महत्व ।।

हर एक सुर में इसके, सुर तो मिलाना पड़ेगा ।
अपना जीवन राग भी, तभी सुरीला बनेगा ।।

धीरज और संयम से ही, पाना है इसका ममत्व ।
ये तो है सर्वशक्तिमान, बड़ा ही इसका महत्व ।।

यह समय है सोच का

नवगीत

भाग रहा मानव से मानव, डर समाया मौत का ।
कोरोना वायरस ले आया, एक साया खौफ का ।।

मनु पड़ गया उलझन में, कैसे बचूँ इस विपदा से ।
भीड़ में भी है अकेला, विश्वास नहीं है और का ।।

प्रकृति पर हो गया हावी, सोचा यह तो मुट्ठी में ।
घूम आयेंगें अब चाँद पर, हम तो अगली छुट्टी में ।।

इच्छाएँ अब कर ली बहुत, चाँद सितारे छूने की ।
यू-टर्न घूम जाओ अब तो, आया मार्ग मोड़ का ।।

जता दिया है प्रकृति ने, तुम अभी भी कच्चे हो ।
मत भूलो इस बात को तुम, धरती माँ के बच्चे हो ।।

अपनी माँ के संग रहो, हवा में ज्यादा नहीं उड़ो ।
देखो आज इस निसर्ग ने, दिया है झटका जोर का ।।

नित नवीन प्रयोग कर तुम, करते रहे हो तहस नहस ।
ऋषि मुनियों के ज्ञान पर भी, करते रहते सदा बहस ।।

लोभ-लालच पर रोक लगे, सीमित साधनों में रहो ।
बैठकर घर में हो चिंतन, यह समय है सोच का ।।

भोर

नवगीत

लालिमा की चुंदड़ी, ओढ़ फिरे सकुचाई।
घूँघट ओट से भोर, भानु देख लजाई।।

मधुर गान कोयल का, नाचे मोर संग में।
उड़-उड़ फुदके पाखी, आज अपने रंग में।
पूर्वा से गलबहियां, अपनी प्रीत निभाई।
घूँघट ओट से भोर ...।।

कालीन लगे दुर्वा, ओस सजीली दमके।
पुष्पों की रंगोली, कलियां खिले हँसके।
शजर कनात लगाये, सब में उमंग छाई।
घूँघट ओट से भोर...।।

नभ में करते बादल, बाल सुलभ सी क्रीड़ा।
गिरे एक दूजे पर, कहाँ उन्हें है पीड़ा।
चंचल सी किरणों की, ओढ़ ओढ़नी आई।
घूँघट ओट से भोर...।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

मन की चाहत

नवगीत

बदरी का संदेशा लेकर, बिजली आती है।
मन की चाहत रही अधूरी, भेजी पाती है।।

अरमानों को गाड़ धरा में, नारी सोती है।
अंदर अंदर आग धधकती, समता बोती है।।
धरती की जब कोख सुलगती, फटती छाती है।
मन की चाहत...।।

मन की पाती पढ़ पाती वो, आस जगाती है।
आशाओं के दीप जलाती, राह दिखाती है।।
सावन आते आते बदरी, वर्षा लाती है।
मन की चाहत...।।

बर्फ शिलाओं सी इच्छाएँ, दबकर रहती हैं।
ज्ञान सूरज की रौशनी से, रोज पिघलती हैं।।
चट्टानों के गीत अधूरे, नदिया गाती है।
मन की चाहत...।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

भाग्य रूठा

नवगीत

टूट के जब गिरि गिरा तो, स्त्रोत का जल सूखता।
भाग्य रूठा आज जिनसे, कौनसा जन पूछता।।

नित्य झपट्टा मार नोचे, बाज देता मात है।
नोचने का काम उसका, दूर से ही घात है।।
सोच के मन आज कुंठित, घाव से ही टूटता।
भाग्य रूठा...।।

सिंह करता घात जब भी, साथ देता कौन है।
झुँड छोड़े भाग निकले, दूर देखे मौन है।।
जो डरे है देख विपदा, शौर्य उससे रूठता।
भाग्य रूठा...।।

शाक से जो पात गिरता, थाह उसको कौन दे।
आज मुरझा जो पड़ी है, वो कली फिर कौन ले।।
आस मोती माल टूटी, कौन सा जन लूटता।
भाग्य रूठा...।

..... ✯ ✯ ✯ .....

भाव बोझल प्रीत के

नवगीत

गान बदला आज कैसा, नाम ओझल रीत के।।
आज मानव खो गया है, भाव बोझल प्रीत के।।

शाक पर वो बैठ काटे, रोज अपनी डाल को।
काम ऐसा आज करते, पूछते फिर चाल को।।
नाव चलना हुई मुश्किल, नेह का जल रीत के।
आज मानव...।।

दूर होकर देखता है, रोकता वो काज है।
पास आना चाहता है, सोच बदली आज है।।
काम कैसे पार होगा, बदले भाव मीत के।
आज मानव...।।

रोक बैठे काज सारे, आँख आँसू पोंछते।
काम करना चाहते हैं, चाह को ही रौंदते।।
आज चाहे पार पाना, पार होकर जीत के।
आज मानव...।।

चाहता है नित्य रच दे, एक नव इतिहास को।
सोच स्याही खो गई है, पा रहा परिहास को।।
रूठ बैठी लेखनी फिर, भाव खोकर गीत के।।
आज मानव...।।

पुस्तक पकड़ ले हाथ में

नवगीत

पुस्तक पकड़ ले हाथ में जब, कोई नहीं पल रूठता।।
रखी जो दूरी पुस्तकों से, फिर ज्ञान का जल सूखता।।

माँ चाँद में रोटी दिखाती, लगती है कौड़ी दूर की।
जान नहीं सकता है कोई, क्या है सोच मजबूर की।।
कुछ भी नहीं है उनके हाथ, सोच के ही मन टूटता।
रखी जो दूरी...।।

पढ़ने की जब आई बारी, पुस्तकें तो सर दर्द थी।
बगलें झाँकने जो लगे थे, गुरु की डाँट भी सर्द थी।
टोली लुभाती मीत की जो, नित्य मस्ती मन लूटता।
रखी जो दूरी...।।

शांत क्षुधा हो जाये सबकी, जो भी पिपासा ज्ञान की।
पाने की जो आस नित्य है, फिर ज्ञान के रस पान की।।
मिला ही नहीं उसको प्याला स्वाद कैसे वह पूछता।
रखी जो दूरी...।।

रस मिले जो ज्ञान का फिर, जीवन सहज ही स्त्राव में।
एक दूजे की करना मदद, परोपकार के भाव में।।
पुस्तक पकड़ ले हाथ में सब, कोई नहीं पल रूठता।
रखी जो दूरी...।।

आज व्यथित है अपना मन

नवगीत

क्रोध की अग्नि तेज जली जो, अपनों से मुँह मोड़ लिया।
आज व्यथित है अपना मन तो, अकुलाता है तोड़ जिया।।

जल बिन मछली जैसा था मन, जब एक दूजे के बिना।
कौन सुदामा कौन कृष्ण है, ऐसा तो फिर नहीं गिना।।
देख रहे अब बिखरे मन को, अपनों को ही छोड़ दिया।
आज व्यथित...।।

शब्दों के जो बाण चले थे, दिल को गहरा छेद गये।
जर जर होते दिल फिर टूटे, मन को गहरा भेद गये।।
हुआ जो छलनी स्वार्थ में मन, अंदर से झिंझोड़ दिया।
आज व्यथित...।।

तेज चली ईर्ष्या की आँधी, धीरज उड़ा चलती बनी।
लालच जागा ऐसा मन में, लोभ की फिर छतरी तनी।।
एक विभाजन की रेखा ने, पक्के घर को तोड़ दिया।
आज व्यथित...।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

कविता ने पहचान बनायी

नवगीत

भावों के रंगों को भरके, जिसने भी जब कलम चलायी।
सुंदर बनकर कविता ने फिर, अपनी निज पहचान बनायी।।

चलता है जब दौर मौन का, भरकर रहते भाव हृदय में।
फिर घड़ियाँ भी ऐसी आती, आता लेखन संग उदय में।।
खाली बैठ काल ना बीते, बैठे बैठे जुगत चलायी।
सुंदर बनकर...।।

विचारों की निज परिपक्वता, जब शब्दों का शृंगार करे।
मनभावन सी चले लेखनी, फिर श्रोता भी स्वीकार करे।।
कुछ छंद गढ़े कुछ चौपाई, कुछ रोला कुँडली मन भायी।
सुंदर बनकर...।।

लेखन बाला नाचे मन में, वो सदा हृदय में मोद भरे।
नितनव भाव सजाती रहती, वही पाठक को हतप्रभ करे।।
कुलीन विचार हिय में जागे, गीतिका ने ली अंगड़ाई।
सुंदर बनकर....।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

मायावी दुनिया

नवगीत

मायावी इस दुनिया ने तो, जाने क्या-क्या जुल्म किये।
छलनामय होते आडंबर, असली मुखड़े छुपा लिये।।

निज लालच की पट्टी बांधे, गांधारी ने जीवन जिया।
बना सुयोधन दुर्योधन जब, अपने कुल का नाश किया।।
आकांक्षा गोदी में पलती, संस्कारों को सुला दिये।
छलनामय... ।।

लोभी मन माया में रहता, नाटक से रिश्ते चलते।
आखिर कितने घर धू-धू कर, स्वार्थ कुँड में रहे जलते।।
मौका परस्त लोगों ने जब, सज्जन चोले बना दिये।
छलनामय...।।

देखी चमक दमक भी ऐसी, करता चकाचौंध जीवन।
असली रूप दिखायें कैसे, उधेड़बुन की है सीवन।।
उस पर पैबंद सौ-सौ टांग, जीवन जटिल बना दिये।
छलनामय...।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

तोड़ दिया बंधन धीरज ने

नवगीत

तोड़ दिया बंधन धीरज ने, हृदय में आँधी चल गयी।
काँच बना मन चटका ऐसे, मुँह से आह निकल गयी।।

प्रेम डोर की बाँधे रस्सी, नेह झूला झूलता मन,
भाव लेते ऊँची छलांगें, तन भी उसमें रहा मगन।।
तेज चली नफरत की आँधी, प्रेम की डोर फिसल गयी।
काँच बना मन...।।

मोदक में बूँदी सा बाँधे, आपस में रहते थे मन।
खुशियों से बल्लियों उछलते, खगों जैसे फुदकते तन।।
भोले भाले बाल खेलते, खुशी अचानक मचल गयी।
काँच बना मन...।।

ईर्ष्या द्वेष के घाव गहरे, एक-एक कर फूट गये।
कहते थे जन्मों के नाते, जाने कैसे टूट गये।।
एकाकी परिवार बने जब, दुनिया उसमें बदल गयी।।
काँच बना मन...।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

प्रेम सुख

दोहावली

झूला सुख का प्रेम है, अपनेपन की खान ।
संबल मन का ये बने, हो जीवन आसान ॥१॥

प्रेम सुखद इक सोच है, ना रखता विद्वेष ।
भाव मन के यही रहे, बदले हर परिवेश ॥२॥

मन की आँखें प्रेम की, मिले सहज ही ज्ञान ।
पूरे करता ये सदा, अपनों के अरमान ॥३॥

सकारात्मक मनन करे, बोये बीज सुजान ।
प्रेम उपज स्वतः फले, सुख उपजे खलिहान ॥४॥

ऊँच-नीच इसमें नहीं, सहनशीलता जान ।
सामंजस्य बना रहे, सह लेता अपमान ॥५॥

प्रेम जीतना जीत है, प्रेम हारना हार ।
दाँवपेंच इसमें नहीं, यह सरल व्यवहार ॥६॥

क्रमशः

नहीं माँगता प्रेम कुछ, यही सुखद है दान ।
देने में भी सुख मिले, पाये खुद सम्मान ।।७।।

प्रेम बने आराधना, जीव जगत की जान ।
भाव प्रबल हो प्रेम के, ये जीवन की शान ।।८।।

पवित्र पावन प्रेम है, सच्चाई पहचान ।
है ये पूजा-अर्चना, मान सके तो मान ।।९।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

झूलता मन

दोहावली

जनम-मरण दो डोर है, शरीर रूपी तख्त ।
बैठ मन झूले उस पर, जीवन एक दरख्त ॥

उठता मन ऊँचा कभी, कब नीचा हो जाय ।
स्थिर रह न पाये कभी, खुद से ही थक जाय ॥

बुद्धि आती कभी कभी, देती ऊपर ठेल ।
होती हताश वो कभी, मन से कैसे मेल ॥

खेल चलता जीवन भर, सुधरे न व्यवहार ।
झेले आत्मा बोझ फिर, करता चित्त विचार ॥

उहापोह में मन रहे, बुनता रहता जाल ।
मन स्थिर कर ध्यान करे, टूटे यह जंजाल ॥

करता रहता ध्यान जो, वो तो रहता शांत ।
कैसी भी विपदा रहे, होगा कैसे क्लांत ॥

रखे अंकुश जो मन पर, जीते वो तो जंग ।
जीवन के आकाश में, भर देता है रंग ॥

कर्म समिधा

दोहावली

जीवन यज्ञ सतत चले, साँसों का घृतपान ।
डालो समिधा कर्म की, पूरे हो अरमान ॥१॥

कर्म कभी मिटते नहीं, छोड़े अपनी छाप ।
ऊँच-नीच देखे नहीं, कर्म ही अपना जाप ॥२॥

कर्मठता स्वभाव रहे, ना लेना खुद तोल ।
जहाँ बदले में माँगते, सही मिले ना मोल ॥३॥

कर्म सदा चुपचाप हो, करना है बस काम ।
देना ये उपहार में, स्वतः मिले फिर दाम ॥४॥

व्यक्ति का निर्माण हो, कर्म बने पहचान ।
जन्मों तक ये साथ दे, यही धर्म है मान ॥५॥

कर्म-दान निःस्वार्थ हो, करे कर्म उपकार ।
कर्म खुद ही बात कहे, करे जगत स्वीकार ॥६॥

क्रमशः

रिश्ता पक्का कर्म से, गुणदोष की खान ।
जैसा जिसका कर्म है, वैसा मिलता मान ।।७।।

सत्कर्मों से हो भला, बुरे कर्म बदनाम ।
जाति-धर्म ना जानता, हो संभल कर काम ।।८।।

शुद्ध भाव से कर्म हो, यही कर्म आधार ।
जैसी जिसकी भावना, तेज कर्म की धार ।।९।।

कर्मठता की लेखनी, रचती है इतिहास ।
कर्म स्वयं ही बोल दे, यही सुखद अहसास ।।१०।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

लगन की ज्योति

मुक्तक

लगन की ज्योति जब जल जाये,
समिधा मेहनत की डल जाये।
विश्वास की अग्नि हो प्रज्वलित,
फिर कर्म यज्ञ भी फल जाये।।

करुणा की ज्योति जल जाये,
संग प्रेम समिधा डल जाये।
फिर परोपकार की चले हवा,
तब धर्म यज्ञ भी फल जाये।।

पर दुख में दिल पिघल जाये,
स्व दुख जो खुद निगल जाये।
जब शब्दों से हो मौन प्रखर,
तब ज्ञान यज्ञ भी फल जाये।।

विचारों की तरंगें लय पाये,
गति भावों की संवर जाये।
हों शब्दों का सुंदर संयोजन,
कविता का रूप निखर जाये।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

मूल्यों की बात

क्रोध

क्रोध से मचता बवाल,
कोई नहीं होता निहाल।
फिर रहता मन खराब,
खड़े होते व्यर्थ सवाल...॥१॥

लालच

जकड़े लालच की जंजीर ,
साथ छोड़ देता जमीर।
होता रहता है पछतावा,
जब बिगड़ जाती तकदीर...॥२॥

कड़वे बोल

कड़वे जो बोलते बोल,
जैसे कान फाड़ू हो ढोल।
करता ना कोई माफ,
तोल मोल के बोल...॥३॥

स्वार्थ

स्वार्थ का जो है भाव,
दिल पर करता घाव।
देने से पहले ही पाना,
बन जाता है स्वभाव...॥४॥

टालमटोल जवाब

ये टालमटोल जवाब,
कर देते काम खराब।
खुद से करते छलावा,
फिर लेता वक्त हिसाब...॥५॥

परनिंदा

चटखारे बहुत ले लिये,
पीकर परनिंदा प्याले।
जब खुद पर आन पड़ी,
तो लगे मुँह पर ताले...॥६॥

नोंकझोंक

बचपन की थी वो बातें,
कह देते बे रोकटोक।
बड़े होने पर वो ही बातें,
लगती है नोंकझोंक...॥७॥

स्वीकृति

तुरंत कार्य- स्वीकृति,
करता मनुष्य प्रगति।
दुनिया भी देती साथ,
बनती अच्छी नियति...॥८॥

..... ☆ ☆ ☆ .....

जिंदगी की राह में

रहती बहुत हैं उलझनें, इस जिंदगी की राह में ।
बस हौसला मिलता रहे, इस जिंदगी की राह में ।।

लगती सभी जो अड़चनें, कभी समय के प्रवाह में ।
रखना स्वयं को सहज ही, इस जिंदगी की राह में ।।

अटके पड़े सब कार्य जो, बने जीवन निर्वाह में ।
लगन बढ़ा कर कार्य करें, इस जिंदगी की राह में ।।

कभी किसी को डरने से, हासिल तो हुआ ही नहीं ।
बिंदास होकर डग भरें, इस जिंदगी की राह में ।।

गल्तियाँ सब में देखना, जिंदगी सहज रहे नहीं ।
सकारात्मक सोच रखना, इस जिंदगी की राह में ।।

लेने की कामना नहीं, देने का भाव हो प्रबल ।
परोपकार के भाव हों, इस जिंदगी की राह में ।।

एक प्यारा सा दिल रहे, बनें किसी के भी संबल ।
अनुशासन के भाव रखें, इस जिंदगी की राह में ।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

वृक्षारोपण

चौपाई

किसको चिंता पेड़ बचायें,
वृक्षारोपण करो बतायें।
नित नव तो सब पेड़ उखाड़े,
पंछियों के भी घर उजाड़े।।

सब मिल तहस नहस करते हैं,
सब अपना ही घर भरते हैं।
लाख कहो चिंता करते हैं,
सबके मानक नव लगते हैं।

सब चाहे हम सबको जोड़ें,
जीवन लय की गलियाँ मोड़ें।
लालच कहाँ किसी का छूटा,
अब सब्र का बाँध भी टूटा।।

अब सुधरो भारतवासी,
कोरोना है रीत नवासी।
साफ सफाई डटकर रखना,
वायरस को भेज दम भरना।।

पर्यावरण मीत बन जाओ

चौपाई

मानव जीवन आज मिला है,
जीवन जैसा फूल खिला है।
यह जीवन खिलता ही जाये,
इसका ज्ञान हमें नित आये।।

मीत प्रकृति के बन जाना,
इसको अब मत और सताना।
वरना आकुल व्याकुल होना,
बैठे-बैठे धीरज खोना।।

सुख सुविधा तो सबको भाती,
मान लिया धरती को थाती।
दोहन इसका होगा कब तक,
पूर्ण नहीं हक मानें जब तक।।

अपनी आजादी छिन जाये,
हमको कुछ कैसे फिर भाये।
थोड़े नियमों को तो मानो,
अपनी सीमा को पहचानो।।

आने वाली पीढ़ी समझे।
वह भी अब व्यर्थ नहीं उलझे।।
पर्यावरण मीत बन जाओ,
इसके मूल्य सभी समझाओ।

सच्चा साथी

चौपाई

'साथी' अपना साथ निभाए।
रीत यही सबके मन भाए।।
ऐसा साथी जब भी मिलता।
खुशियों का फिर पुष्पक खिलता।।

देना साथ सदा ही ऐसा।
तुच्छ लगे जिसके सम पैसा।।
मन से सच्चा तार जुड़ेगा।
मन का पाखी नित्य उड़ेगा।।

आज कई ये देख मुखौटे ।
मन के भाव बने जो खोटे।।
देख दुखी मन तो होता है।
किस्मत फिर वो तो खोता है।।

जीवन भर का रोष बढ़ेगा।
मन से नाता तोड़ कहेगा।।
भारी भूल यही फिर होगी।
मन से बनते फिर वो रोगी।।

क्रमशः

गल्ती जीवन में होती है।
माफी खुशियाँ ही बोती है।।
आपस में फिर नेह बढ़ेगा।
प्रेम सदा परवान चढ़ेगा।।

मन विश्वास कभी मत तोड़ो।
साथ रहे साथी मत छोड़ो।।
खेल इसे मत समझो मानो।
सच्चे साथी को पहचानो।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

माँ है अनमोल

अनमोल है मां का रिश्ता,
जीवन भर लुटाए ममता।

सदा साथ विपदा में रहता,
मुझसे पहले आंसू बहता।

उसके आगे कोई ना टिकता,
सबसे सुंदर मां का रिश्ता।

यह तो स्वयं ही सुंदर कविता,
धरा पर जैसे उतरा फरिश्ता।

अपने सर आंखों पे ममता,
मन मंदिर में सबके बसता।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

मैं रहूँ बन चाँदनी

मैं रहूँ बन चाँदनी, चंद्रमा के साथ ।
प्रिया बनूँ मैं चंदा की, ले हाथों में हाथ ॥

बादलों पर बैठ करूँ, सैर सपाटे साथ ।
खुली हवा में डोलती, फिरूँ पिया के साथ ॥

वो करेंगे जब मुझसे, अपने दिल की बात ।
रख दूँगी दिल खोल के, मैं भी उनके साथ ॥

शांत चित्त से होगी बातें, मेरी उनके साथ ।
मन खुशियों से झूमेगा, ले हिलोरें साथ ॥

पूर्ण कलाओं का संगम और पूनम की रात ।
हर्षित पल मेरे होंगे, रहूँ बलम के साथ ॥

..... ☆ ☆ ☆ .....

परिवर्तन

बदल रही रूप प्रकृति, देती हमें संदेश ।
परिवर्तन है ज़रूरी, जीना हर परिवेश ।।

चलता रहे समय चक्र, होते दिन और रात ।
परिवर्तन है प्रक्रिया, डरने की नहीं बात ।।

क्यों हुआ परिवर्तन, ना हो इस पर विचार ।
नवीन का हो स्वागत, मिलती खुशियाँ अपार ।।

जीवन की यह कुंजी, नवीन खोले ताले ।
बदलती है जिंदगी, रूप इसके निराले ।।

कैसी भी रहे स्थिति, कार्य से नहीं विराम ।
विचार सदा सरल हो, नेक करना है काम ।।

पार होगी मुसीबत, रखना आत्मविश्वास ।
होता सदैव अच्छा, करते रहना प्रयास ।।

काम कर्मठ हो करें, धीरजता से विचार ।
चलकर स्वयं मंजिल, आ जाय अपने द्वार ।।

मन की बात

मन को चाहे थोड़ा प्यार ।
और चाहे थोड़ी मनुहार ।।

मिले इसे कितना भी ज्ञान ।
रहे जिज्ञासु होकर जवान ।।

मनुष्य भले बूढ़ा हो जाये ।
मन सदा बच्चा कहलाये ।।

नित बुनता यह ताना-बाना ।
नित्य नव इसका है तराना ।।

हो स्वछंद विचरण यह करता ।
अनुबंध कहाँ इस पर चलता ।।

कितने नियम रोज बनाओ ।
मन को कोई बाँध दिखाओ ।।

रोज नयी खुशियाँ और गम ।।
जितना समझें उतना है कम ।

कभी नहीं समझा अपना मन ।
हम पढ़ते हैं दूजों का मन ।।

मन का भेद

कोई भी मतभेद रहे पर ।
मन का भेद नहीं हो प्यारे ॥

माता-पिता व भाई - बहिना ।
सबसे न्यारे सबसे प्यारे ॥

पति-पत्नी, बच्चों का रिश्ता ।
जीवन का, संबल है प्यारे ॥

रिश्तों से अब दूरी कैसी ।
यही निकट हैं सबसे प्यारे ॥

अगर ईर्ष्या भी सर उठाये ।
प्रेम संग झुक जाना प्यारे ॥

क्रोधित होते मन को फिर भी ।
धीरज रख समझाना प्यारे ॥

नेह की सरल धारा में बस ।
सदैव बहते रहना प्यारे ॥

बात प्रेम की सदा निराली ।
धर्म यही बस मानो प्यारे ॥

मधुशाला

सहज सरल जीवन जीते जो, ज्ञान मयी पीते हाला ।
आडंबर से दूर सदा वे, घर है उनका मधुशाला ।।

कम बोला पर मीठा बोला, पीते प्रेम भरा प्याला ।
चंचल मन को बाँध लिया फिर,घर उनका है मधुशाला ।।

नकली मुखौटे छोड़ जिसने, धारण असली कर डाला ।
सच्चाई की समझ जिसे है, घर है उनका मधुशाला ।।

कामनाएँ बंद मुट्ठी में, जिसने अनुशासन पाला ।
नैतिक मूल्यों को वे समझे, घर है उनका मधुशाला ।।

जिसने त्याग दिया निज डर को, विपदा पर रहता ताला ।
राज करे हर दिल पर वे तो, घर है उनका मधुशाला ।।

मानवता की समझ जिसे हो, दया धर्म में मन ढ़ाला ।
अनुकंपा हो जिनके मन में, घर है उनका मधुशाला ।।

इन भावों की समझ जिसे हो, मन सतरंगी रंग डाला ।
मस्ती में अपने मस्त रहे, घर ही उनका मधुशाला ।।

माता-पिता का कर्ज

कभी गर्म कभी सर्द होता है ।
मौसम बड़ा ही बेदर्द होता है ।।

कभी खुशी कभी गम देता है ।
जमाना बड़ा खुदगर्ज होता है ।।

तन की व्याधि मिट सकती है ।
मन का बोझ सिरदर्द होता है ।।

भेदभाव तो हरदम सताता है ।
दिल में बड़ा ही दर्द होता है ।।

बाँटने से बोझ हल्का होता है ।
मीत हमारा हमदर्द होता है ।।

जिन लोगों ने हमको तराशा है ।
इज्जत देना तो फर्ज होता है ।।

कभी भी उतार नहीं सकते हैं ।
माँ-बाप का ऐसा कर्ज होता है ।।

आज वही मन मीत हुआ

खुशियाँ बन कर आया समय ।
पलक झपकते व्यतीत हुआ ।।

अनजाना था जो कल तक ।
आज वही मन मीत हुआ ।।

पल भर साथ मिला पहले ।
अब सुरीला संगीत हुआ ।।

सुर, ताल, लय मिल गये ।
दिल जैसे नवनीत हुआ ।।

मन में तरंगे उठने लगी ।
अपनेपन का गीत हुआ ।।

दस्तक दिमाग पर देकर ।
सबसे सुंदर गीत हुआ ।।

मैं तो दिल हार चुकी थी ।
पर वो मेरी ही जीत हुआ ।।

अनजाना था जो कल तक ।
आज वही मन मीत हुआ ।।

क्रोध का मूल

जिद क्रोध के मूल में, पक्की जिद की गाँठ ।
बढ़ती दिल में नफरत, और कसती है गाँठ ।।

मन में बसा प्रेम भी, छोड़ देता फिर साथ ।
द्वेष फिर बढ़ता रहे, पड़े एक और गाँठ ।।

जब ईर्ष्या-लालच भी, जाग जाते हैं साथ ।
करने लगते ये भी, फिर मिलकर साँठगाँठ ।।

अहंकार रहे सदा, वो तो चित्त के साथ ।
बजाय खोलने के, वह और कस दे गाँठ ।।

होली फिर रिश्तों की, छोड़ दे कुटुंब साथ ।
दिवस-रात सोचे मन, कैसे खोल दें गाँठ ।।

टेसू पलाश देखकर, दिल होता उत्साहित ।
फागुन आकर खोले, मन में पड़ी जो गाँठ ।।

जब-जब आता अवसर, सुनलो हृदय की बात ।
अनसुलझे नहीं बने, रिश्ते उलझ के गाँठ ।।

ममतामयी नाव

ममतामयी है सुंदर नाव ।
धूप लगे या शीतल छाँव ।।

पल्लू की पतवार बनाकर ।
अपने रूह में हमें बिठाकर ।।

तूफानों से पार लगाए ।
जीवन के सब पाठ पढ़ाए ।।

माँ को देना सदा सम्मान ।
ये रिश्ता तो सबसे महान ।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

कर्मठता

कर्मठता की बात निराली ।
जहाँ जाए वहाँ खुशहाली ।।

लगे किसी किसी के हाथ ।
चाहे रखना हर कोई साथ ।।

अपने रास्ते खुद बनाये ।
दूसरों को भी राह दिखाये ।।

आलस्य से है कोसों दूर ।
लगन कार्य की है भरपूर ।।

रहती सदा अपने दम पर ।
मदद करने को रहती तत्पर ।।

जीवन के सब गुर सिखाती ।
सफल होने के पाठ पढ़ाती ।।

अंदर आत्मविश्वास जगाती ।
अकेले ही सबसे लड़ जाती ।।

ऐसी मिल जाये एक सहेली ।
जीवन रहे न कभी पहेली ।।

वक्त की मार

सोच सबकी सही होती है ।
वक्त की मार बुरी होती है ।।

कितना भी सीखा जीवन में ।
नित चुनौती नयी होती है ।।

कोई कितनी बात घुमाये ।
बात फिर भी वही होती है ।।

कटुता सदा भुलाना चाहो ।
यादों में फिर वही होती है ।।

रोजमर्रा की नोकझोंक में ।
बात कुछ भी नहीं होती है ।।

माँ कितनी बात संभाल ले ।
बात बाल की सही होती है ।।

जिसका भी चले समय अच्छा ।
उसकी बात बड़ी होती है ।।

नदी मैय्या

मैं हूँ नदी मैय्या तुम्हारी,
जीवन चलता है मुझ से।
बनी रहे पवित्रता मेरी,
प्रयत्न करना है अब से।

मैं तो हूँ जीवनदायिनी,
प्रवाह चलता है मुझ से।
बचा रखना अस्तित्व मेरा,
प्रयत्न करना है अब से।

लगातार मैं रहूँ प्रवाहित,
पोषित होते रहना मुझ से।
मेरी तरलता नहीं सूखे,
प्रयत्न करना है अब से।

क्रमशः

मेरा पूरा न करें दोहन,
सूखे नहीं अमृत मुझ से।
विनाश लीला से दूर रखो,
भरण पोषण करें मुझसे।

मुझे बाँध ना डालो बंधन,
कराओ ना प्रलय मुझ से।
धारा प्रवाह ही बहा करूँ,
प्रयत्न करना है अब से।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

बोल रहे पाषाण अब

बोल रहे पाषाण अब,
व्यक्ति तो हुआ मौन है।
छोड़ा खुद को तराशना,
पत्थरों का दौर है।

कभी घर की दीवारें,
कभी आँगन-गलियारे।
रखना खुद को सजाकर,
रंग-रौगन का दौर है।

घर के महंगे शो पीस,
बुलाते चारों ओर हैं।
मनुज को समय नहीं,
अब चुप्पी का दौर है।

क्रमशः

दिखावे की है दुनिया,
कलाकारी सब ओर है।
असली चेहरा छुपा लो,
अब मुखौटों का दौर है।

मन की आँखें खोल लो,
मौन करता अब शोर है,
पहले खुद को तराश लो,
दूसरों पर कहाँ जोर है।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

सुख का राग

सुख पाने की चाहत में,
मिल गये बहुत सारे दुख।
दुख को जब झुठलाया,
तब जीवन रास आया।।

बात-बात में व्यथित मन,
पहले रोता था हरदम।
जब मन को समझाया,
तब जीवन रास आया।।

होता नहीं सदा मर्जी का
कहीं मिले अपमान व दुख।
जब मन को मस्त बनाया,
तब जीवन रास आया।।

बार बार मन विरोध करता,
पानी सर से ऊपर उठता।
सुख का राग जब गाया,
तब जीवन रास आया।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

कृष्ण से प्रकाश है मनहरण घनाक्षरी

अंधकार छाया काला, प्रकाश का बोलबाला ।
आसमान से हुँकार, तम का विनाश है ।।

कंस का था काला मन, हताशा में डूबे जन ।
ऐसा अवतार लिया, बुराई का नाश है ।।

बाँसुरी की धुन प्यारी, नाचते थे नर नारी ।
सबके हृदय बसे, करे न निराश है ।।

गीता सार फरमाये, ज्ञान गुरु कहलाये ।
आज भी सब मानते, कृष्ण से प्रकाश है ।।

..... ✯ ✯ ✯ .....

दृष्टि दान

मनहरण घनाक्षरी

परोपकार है प्यारा, मनुज का जन्म न्यारा ।
पाओ पुण्य ढ़ेर सारा, सोच से ही रीझिए ।।

कैसा भी निर्बल रहे, दुख तो सदा ही सहे ।
दुखियों का दुख बड़ा, ज्ञात कर लीजिए ।।

किसी के अंधेरे दूर, देख पाये भरपूर ।
आँखें मरने के बाद, काम आने दीजिए ।

मन की अपनी सृष्टि, गर्मी में जरूरी वृष्टि ।।
आँखों की जरूरी दृष्टि, दृष्टि दान कीजिए ।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

लेखन कला

मनहरण घनाक्षरी

निखारे लेखन कला, चले यही सिलसिला ।
छंदशाला चल रही, ज्ञान नित लीजिये ।।

गुरुओं का ज्ञान देना, छंद दोहा जान लेना ।
हर्षित मन हो जाये, अलंकार सीखिये ।।

परंगत जो हो जाता, सहज ज्ञान दे पाता ।
दक्षता फिर बढ़ाने, समीक्षा भी कीजिये ।।

गुरु जी ने शुरू किया, सबने पोषित किया ।
सहयोग सबका है, मन से भी रीझिये ।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

बुद्ध संदेश

मनहरण घनाक्षरी

अहिंसा का मान कर, सत्य का ही साथ कर ।
सत विचारों का सदा, साथ देना चाहिए ।।

सुख पाने की है रीति, धर्म की यही है नीति ।
सही गलत समझ, मान लेना चाहिए ।।

जीतो क्रोध को प्रेम से, लोभ को सदाचार से ।
अज्ञान को तो ज्ञान से, जीत लेना चाहिए ।।

इच्छाओं का त्याग करो, कभी नहीं राग करो ।
धर्मोपदेश बुद्ध के, जान लेना चाहिए ।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

सती सावित्री

मनहरण घनाक्षरी

धर्म है जिसके साथ, नियम से बंधे हाथ ।
जीवन की बात सच, हम सभी जानते ।।

नारी ने जब भी ठानी, उसने तो कर मानी ।
त्रिया हठ होती खास, कोई नहीं टालते ।।

कर्म से जिसे है प्रीत, होती है उसी की जीत ।
सावित्री की बात सुन, आज सभी मानते ।।

नारी को पति से प्यार, काल भी गया था हार ।
सावित्री के प्रश्न जाल, यम जैसे भागते ।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

परिवार

मनहरण घनाक्षरी

विद्वेष को रोके रखें, क्रोध सदा शांत रखें ।
जो शांति विस्तार करे, हाथ वही थामना ।।

विकार जो धूमिल हो, विश्वास ना बोझिल हो ।
सकारात्मक सोच की, बात सही जानना ।।

संबंधों की बात रहे, आपस में मान रहे ।
एक दूजे का सम्मान, एक यही साधना ।।

प्रेम आपस में बढ़े, परिवार सुखी रहे ।
खुशियों की नींव पड़े, बात सही मानना ।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

मित्र

मनहरण घनाक्षरी

मीत सुख देखते हैं, दुख संग झेलते हैं ।
ऐसे मित्र रहे साथ, मान सदा दीजिए ।।

कहते जो करते हैं, साथ खड़े रहते हैं ।
ऐसा मित्र परिवार, बहुमान कीजिए ।।

विपदा जो मीत पर, काम आये बढ़ कर ।
मन से झंकृत तार, दिल से भी भीजिए ।।

जान पर बन आये, फिर भी वो काम आये ।
ऐसा दिलदार मीत, मन से भी रीझिये ।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

परोपकारी

मनहरण घनाक्षरी

पर दुख सोचते हैं, पर हित बोलते हैं ।
ऐसे परोपकारियों, का सम्मान कीजिये ।।

कहते जो करते हैं, मित भाषी रहते हैं ।
ऐसे सदाचारियों को, मान सदा दीजिये ।।

जान पर बन आये, फिर भी वो काम आये ।
ऐसा दिलदार देख, मन से ही रीझिये ।।

अच्छे लोग गलती से, गलती करे अगर ।
दिल खोलकर उन्हें, माफ सदा कीजिये ।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

अकर्मण्यता

मनहरण घनाक्षरी

ढीटता जो ठान लेते, कार्य भार नहीं लेते ।
ऐसे लोग छुप - छुप, यहाँ वहाँ भागते ।।

खुद की जो आये बारी, दूसरों की जिम्मेदारी ।
ऐसे अवसर पर, बगलें ही झाँकते ।।

सलाह देने की ठाने, जब कोई नहीं माने ।
अकुलाहट रखते, कुछ नहीं जानते ।।

समय है मूल्यवान, हमने तो लिया जान ।
कर्मठता रहे शान, हम यही मानते ।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

दुर्जन

जलहरण घनाक्षरी

दुर्जन के देख काम, दुख में बीते है शाम ।
तनिक नहीं हो काम, मन करे भन भन ।।

खुद पे करे गुमान, किसी का ना करे मान ।
समय है बलवान, भले हो प्रबल मन ।।

व्यग्रता की हो दस्तक, काम करे न मस्तक ।
पढ़ लो चाहे पुस्तक, घुमड़ते दुख घन ।।

हो जाये जब नादानी, याद आये फिर नानी ।
बन जाती है कहानी, जैसे हो बुरा सपन ।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

भेद नीति

कृपाण घनाक्षरी

हैं यहीं सुर - असुर, बात समझें जरूर ।
भ्रमित करे गुरूर, निकाले तीर-कमान ।।

ऊँच नीच भेद रीति, करे जुदा वर्ग नीति ।
सभी तो मनु प्रतीति, देखिये एक समान ।।

रखते हैं भेद भार, चाहे नर हो या नार ।
करना सभी से प्यार, जुदा क्यों है फरमान ।।

शिक्षा फिर कैसी पाय, पूरी समझ ना आय ।
अज्ञानता ऐसी छाय, करते नहीं सम्मान ।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

प्रकृति धुन

विजया घनाक्षरी

बिजली की दन दन, बादलों की घन-घन ।
बरसाती धुन गुन, प्रसन्न हो जाय जन ।।

छूता जो पहाड़ नभ, जाये वहाँ जन-जन ।
नाचते आँगन घन, भीगते हैं तन मन ।।

हवाओं की सन-सन, झिंगुरों की धुन सुन ।
जंगलों में जाय जन, घूमते सघन वन ।।

काटे वन जब जन, थोड़ा मिले तब धन ।
लालसा में रत मन, भोगे फल आमजन ।।

..... ☆ ☆ ☆ .....

नाम : मधु राजेंद्र सिंघी

शिक्षा : एम.ए. (संस्कृत), विशारद (गायन)

रुचि : समाजसेवा, गायन, पठन, लेखन, फोटोग्राफी

कार्य : संस्थापिका (समरूपण)

वेबसाइट : www.samrupan.org

msmadhusinghi8@gmail.com

प्रकाशित पुस्तकें

एकल संग्रह :

१) मधुकृति (हाइकु व हाइगा संग्रह)

२) मधुछंद (काव्य संग्रह)

३) मधुश्रव्य (भजन संग्रह)

साझा संग्रह :

१) गीतमाला, २) जैन भजन संग्रह, ३) जैन भजनावली, ४) प्रणम्य वीर (भजन), ५) झाँकता चांद (हाइकु), ६) हाइकु सम्मेलन (हाइकु), ७) ताँका की महक (ताँका), ८) प्रवाह (हाइकु), ९) हाइकु की सुगंध (हाइकु), १०) हाइकु मंजूषा (हाइकु संग्रह), ११) कस्तूरी की तलाश (रेंगा), १२) चारु चिन्मय चोका, १३) ये दोहे गूंजते से (दोहा छंद), १४) कुंडलियां बोलती है (कुँडलिया छंद), १५) गुँजन (हाइकु संग्रह), १६) घनाक्षरी गूँजेगी (घनाक्षरी छंद), १७) २०२० के अनुपम दोहे, १८) आल्हा के हस्ताक्षर शंखनाद, १९) हाइबुन संग्रह

भजन एवं काव्य पाठ प्रस्तुति : आकाशवाणी , दूरदर्शन, फेसबुक, यूट्यूब एवं सार्वजनिक मंच।

कविताएँ प्रकाशित : प्रसिद्ध हिंदी पेपर नवभारत नागपुर एवं साप्ताहिक पत्रिकाएँ।

सम्मान : नागपुर महानगरपालिका महिला आघाड़ी मोर्चा नागपुर, कलामंच नागपुर, टाइम्स ऑफ इंडिया, स्नेह आँगन मातृ सेवा संघ, आदर्श महिला मंडल, श्री किसन मूक बधिर संस्था, भावांजलि जोधपुर, हाइकु रत्न छत्तीसगढ़, साहित्य कला मंडल नागपुर, ज्येष्ठ राजपूत फोरम नागपुर, मात्सुओ बासो शब्द शिल्पी अलंकार पानीपत, कविता बहार सम्मान, हिंदी महिला समिति नागपुर, आल्हा शतकवीर, सवैया शतकवीर, चंद्रमणि शतकवीर, कलम की सुगंध, लाईफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड डॉ. रिचाज यूनिक क्लिनिक एवं टाईम्स ऑफ इंडिया पुणे

अविशा प्रकाशन
AVISHA

978-93-5578-560-2